जाग उठी तरुणाई

रमेश शर्मा

लेखक का परिचय

रमेश शर्मा का जन्म गांव मंढ़ाणा, तहसील नारनौल (हरियाणा) में श्रीमती लक्ष्मी देवी एवं श्री जयनारायण शाण्डिल्य के परिवार में 5 मई 1950 को हुआ।

छात्र काल से ही सामाजिक कार्यों में रूचि बढ़ी। दिल्ली विश्व विद्यालय में पढ़ते समय गांधी अध्ययन केन्द्र के अध्यक्ष एवं 'आत्मादर्पण', 'युवाकल्याण' पत्रिका के सम्पादक।

तरूण शांति सेना, अकाल बनाम तरुण अभियान, बिहार एवं बंगलादेश राहत कार्य, चम्बल घाटी बागी समर्पण, भारत जोड़ो अभियान, ग्राम कोष, ग्राम स्वराज्य एवं सम्पूर्ण क्रांति आन्दोलन में सक्रिय योगदान। बिहार, असम, पंजाब, जम्मू-कश्मीर में शांति कार्यों में भागीदारी एवं युवाओं के दल ले जाना। अध्ययन दल एवं शिविरों का आयोजन।

सिखों पर हुए अत्याचार के खिलाफ कार्य। गांधीजी की 125वीं जयन्ती पर राष्ट्रीय गांधी स्मृति यात्रा का नेतृत्व। तिब्बत समर्थन यात्रा का आयोजन। गांधी युवा बिरादरी के राष्ट्रीय संयोजक।

गांधी विचार, मानवाधिकार, लोकतांत्रिक मूल्य, अध्यात्म निष्ठ, सौहार्द, समाज परिवर्तन आदि संगठनों, संस्थाओं, समूहों से सम्पर्क।

भारत का व्यापक भ्रमण। अमेरिका, कनाडा, मैक्सिको, थाईलैण्ड, श्रीलंका, नेपाल, बंगला देश का प्रवास।

लेखक की अन्य कृतियां–आओ मिलकर गाएं, युवा गांधीजन-मिलन, राष्ट्रीय गांधी स्मृति यात्रा, जम्मू कश्मीर : अरुणोदय जरूर होगा, तिब्बत समर्थन यात्रा, अमरीका भ्रमण, राष्ट्रीय युवा रचनात्मक कार्यकर्ता सम्मेलन आदि।

सम्प्रति–गांधी शांति प्रतिष्ठान में कार्यरत रहते हुए युवा कार्यक्रमों में सक्रिय।

जाग उठी तरूणाई

रमेश शर्मा

गांधी युवा बिरादरी
नई दिल्ली

किसी भी सामग्री के निर्माण में व्यक्ति के साथ-साथ समाज के ज्ञान का भी आधार होता है। इस पुस्तक की सामग्री का प्रयोग किसी भी रूप में किया जा सकता है, स्रोत का उल्लेख करें तो अच्छा लगेगा, उत्साह बढ़ेगा।

जाग उठी तरुणाई

लेखक : रमेश शर्मा

सहयोग : पचास रुपया

प्रकाशक : गांधी युवा बिरादरी
223 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग
नई दिल्ली 110002

मुद्रक:—सर्वोदय प्रेस दिल्ली

दिल की बात

कौसानी, कुमाऊँ के भाई-बहनों के मध्य युवा आन्दोलन पर बोलने के लिए गांधी विचार परिषद् ने मुझे वर्धा बुलाया था। मैं उस समय शारीरिक कष्ट से भी गुजर रहा था। डा. उल्हास जाजू की तेज निगाहों से मैं रोग को नहीं छुपा सका और डा. जाजू द्वै (उल्हास भाई, सुहास भाई) के प्रेमाग्रह, अपनेपन के आगे दवा भी लेने लगा। दवा से ज्यादा दोनों के प्रेम ने असर दिखाया। इस बीच लगभग तीन सप्ताह का समय बापू और बाबा विनोबा की तपो-भूमि वर्धा में ही रहने का सौभाग्य मिला और उसी समय यह पुस्तक लिखने की प्रेरणा हुई।

जीवन में कष्ट और दुःख भी अवसर प्रदान करता है। इसी अवसर का लाभ उठाकर कार्य करते हुए जो कुछ देखा, समझा, जाना, माना उसे अपने शब्दों में लिख डाला। जो अच्छा है वह समाज से ही सीखा एवं जाना है और जो भूल, कमी है वह मेरी अपनी सीमा के कारण है।

तरुणाई ने ही हर क्षेत्र में इतिहास रचा है फिर भी युवा, तरूणाई को ही सदैव कठघरे में खड़ा किया जाता रहा है, समय कोई भी रहा हो। सामाजिक से लेकर आध्यात्म तक की पगडंडी, राह युवा ने ही बनाई है। हिमालय की ऊंचाई और सागर की गहराई को नापने का साहस युवा ने ही दिखाया है। इतिहास बोध और क्रांति की लगाम को युवा ही समझ, पकड़ पाता है।

आज भी युवा जागरूक है, तत्पर है कुछ-कर गुजरने को। पुस्तक उन्हीं को समर्पित है जिन्होंने रचना, संघर्ष, निर्माण, स्वतंत्रता, तपस्या की राह पर अपना जीवन वारा है, वारने को तैयार हैं और तैयार होंगे।

इस पुस्तक के लिए जिनका जो भी, जिस रूप में भी सहयोग, सहकार, प्रेरणा, आशीर्वाद प्राप्त हुआ है, उनका मैं हृदय से आभारी हूँ।

—रमेश शर्मा

साथियों की राय

यह पुस्तक युवकों को नई दिशा देगी

परिवर्तन और विकास की महत्वपूर्ण उपलब्धियां सदैव तरुणाई के हिस्से में लिखी गयी हैं। अतीत इस बात का सबसे बड़ा गवाह है कि जब भी किसी समाज, देश अथवा युग में बदलाव की आवश्यकता और ललक पैदा हुई है तब उस काल की युवा पीढ़ी ने आगे बढ़कर अपना बलिदान दिया है। भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन का प्रत्येक पृष्ठ ऐसी ही गाथाओं से भरा पड़ा है।

आजादी की स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर श्री रमेश शर्मा द्वारा सृजित "जाग उठी तरुणाई" का प्रकाशन एक महत्वपूर्ण प्रयास है। श्री शर्मा अनेक वर्षों से देश के युवाओं के बीच सक्रिय हैं। जहां एक ओर वे अपने सद्प्रयासों से निरन्तर उन्हें मार्ग दर्शन देते रहे हैं, वहीं दूसरी ओर स्वयं सक्रिय होकर उनसे सीधा संवाद भी स्थापित करते रहे और साथ ही अनेक कार्यक्रमों में उनका नेतृत्व भी करते रहे हैं। यह कृति ऐसे ही प्रयास का एक जीता-जागता उदाहरण है।

विश्वास के साथ कहा जा सकता है कि यह पुस्तक वर्तमान समय की विसंगति पूर्ण परिस्थिति में जूझ रहे आज के युवा मन को नई रोशनी से भरेगी तथा उनकी ऊर्जा को एक सकारात्मक एवं रचनात्मक दिशा देने में भी सक्षम होगी।

शुभकामनाओं के साथ,

चन्द्रशेखर
निदेशक
(उत्तरी मण्डल)
नेहरू युवा केन्द्र संगठन

साथियों की राय

युवा आन्दोलन को गति देगी यह पुस्तक

युवा मित्रों को प्रोत्साहित करने और देश-दुनिया में युवा आन्दोलन की भूमिका से पाठकों को परिचय कराने की दृष्टि से श्री रमेश शर्मा, गांधी शांति प्रतिष्ठान, युवा विभाग द्वारा जो पुस्तक तैयार की गई है, उसका मैं स्वागत करता हूं। वर्तमान में जब चारों तरफ एक निराशा सी फैली हुई है, दिशा बोध की कमी के बारे में निरंतर चर्चा हो रही है, ऐसे अवसर पर युवा आंदोलन का इतिहास समझना और उसकी भूमिका को लेकर पुन: बहस छेड़ना अति महत्वपूर्ण कार्य है।

मैं मानता हूं कि पिछले दशक में युवा शक्ति की पहचान पुन: हुई है। देश-दुनिया में वर्तमान विकास की अवधारणा के विरोध में, पर्यावरण के संदर्भ में, प्रजातांत्रिक मूल्यों के संरक्षण के लिए, मानव अधिकार के मुद्दों को लेकर जो आंदोलन चल रहे हैं उन सभी स्थानों पर युवा साथियों की भूमिका स्पष्ट परिलक्षित हो रही है। इनमें अधिकतर युवा साथी गांधीजी के सिद्धांत से प्रेरित हैं। उनकी बहस में आवश्यकता और लालच का विश्लेषण बराबर सुनाई पड़ रहा है। इसी प्रकार वैकल्पिक राजनैतिक प्रक्रिया में लगे हुए साथी, माध्यम और परिणाम के मुद्दे को लेकर बहस कर रहे हैं।

घोर निराशा के बीच भी गांधी प्रेरित जो युवा शक्ति उभर रही हैं, उन्हें देखकर मन को तसल्ली मिलती है। रमेश भाई द्वारा लिखित प्रस्तुत पुस्तक युवा साथियों को स्वयं की पहचान तो कराएगी ही साथ ही साथ अपनी भूमिका को लेकर बहस छेड़ने का भी अवसर देगी। उपभोक्ता संस्कृति से पीड़ित समाज को कर्त्तव्य निष्ठ बनाने के लिए यह जरूरी है कि वह पहले वर्तमान परिस्थिति पर और अपनी भूमिका को लेकर बहस करे।

मुझे विश्वास है कि सिर्फ युवा वर्ग ही नहीं, युवा वर्ग की भूमिका पर रुचि रखने वाला प्रत्येक व्यक्ति इस पुस्तक का स्वागत करेगा और अधिक से अधिक लोगों तक इसे पहुंचाने में मददगार भी होगा।

(राजगोपाल पी. वी)
मंत्री
गांधी शांति प्रतिष्ठान
नई दिल्ली

जाग उठी तरुणाई

युवा शक्ति 1

युवा कौन 6

युवा विरोध/विद्रोह 11

आज का युवा 15

आज भी युवा सक्रिय 20

विकल्प नहीं संकल्प 22

ग्रामीण-शहरी युवा, छात्र-गैर छात्र युवा 27

आदर्श और आचरण 30

युवा नीति का अभाव 32

युवा नीति 34

भारत की युवा परम्परा 40

विश्व की युवा परम्परा 43

आधुनिक युवा आन्दोलन 44

आधुनिक युवा आन्दोलन भारतीय संदर्भ 51

युवा शक्ति

युवा, तरुण, जवान शब्द ओठों पर आते ही एक विशेष छवि सामने आ जाती है। यह छवि समय-समय पर बदलती भी रहती है। देश, काल, परिस्थिति के कारण भी इस छवि में बदलाव आता है। वातावरण, बहाव के कारण भी इसमें अन्तर पड़ता है। आज तक युवा के अनेक रूपों का वर्णन हम जानते, पढ़ते आए हैं। इतिहास के पन्नों में युवाओं की गाथाओं, पराक्रमों का वर्णन किसी न किसी रूप में हमको मिलता है। इन सबके बावजूद दुनिया में युवाओं की अपनी एक पहचान, प्रकृति भी मानी जाती है, वह है भी। युवा बदलाव, परिवर्तन, क्रांति का वाहक एवं प्रतीक भी हैं।

दुनिया में जो भी परिवर्तन, बदलाव आए हैं उनमें युवाओं की अपनी भूमिका रही है। अगर कहा जाए कि युवा ही परिवर्तन, बदलाव, निर्माण, रचना, संघर्ष, साधना का मार्ग प्रशस्त करता है तो यह कदापि अतिशयोक्ति नहीं, बल्कि यह सनातन सत्य है। सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, धार्मिक, आध्यात्मिक कोई भी परिवर्तन एवं निर्माण हो उसके पीछे युवा की महत्त्वपूर्ण भागीदारी है। युवाओं ने ही आज तक नये मार्ग खोले हैं। युवा करवट लेता है तभी नये रास्ते खुलते हैं। युवा एक शक्ति है। दुनिया में हुए किसी भी प्रकार के परिवर्तन में युवा ही आगे रहा है। वह परिवर्तन का वाहक है। युवा के चारों ओर ही परिवर्तन, बदलाव, रचना, निर्माण, संघर्ष, साधना रहती है। प्रत्येक क्षेत्र में युवा की भूमिका स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। दुनिया के प्रारंभ से ही युवाओं की भूमिका महत्त्वपूर्ण रही है। युवा ही परिवर्तन में प्रासंगिक एवं कारगर है। कोई भी परिवर्तन युवा ही कर सकता है। युवा ही ऐसी आयु है जिसमें किसी भी राह की नींव रखने का माद्दा होता है।

वह अपना रास्ता तय, निश्चित कर उसको पाने का प्रयास करता है।

युवा का समाज के प्रति विशेष उत्तरदायित्व है। समाज की शक्ति, गति युवाओं पर निर्भर है। युवा समाज का दर्पण है। किसी समाज के युवाओं को देखकर उसके भविष्य का खाका (चित्र) खींचा जा सकता है। किसी भी समाज के भविष्य को जानना है तो उसकी युवा पीढ़ी को जानना, समझना होगा। युवा समाज की नब्ज होता है जिसे देखकर उसकी (समाज की) हालत समझी जा सकती है कि क्या होगी। संख्या की दृष्टि से भी समाज में युवा बड़ी तादाद में है।

मानवीय सत्त्व और शील के उत्कर्ष के लिए उम्र कोई कसौटी नहीं है। हमारे पूर्वजों ने साधारणतः कम उम्र में ही बड़े-बड़े काम कर दिखाये हैं। प्रत्येक क्षेत्र में युवा ने अपने कार्यों से प्रकाश स्तम्भ, मानक स्तम्भ पैदा किये हैं। नये द्वार खोले हैं। नई मान्यतायें, परम्परायें स्थापित की हैं। किसी भी महान व्यक्ति के जीवन को देखें तो आमतौर पर पायेंगे कि युवापन में ही उन्होंने जीवन की ऊँचाइयों की ओर बढ़ना शुरू किया। छोटी उम्र से ही उन्होंने जीवन की नींव मजबूत करनी शुरू की। छोटी उम्र में ही अपने जीवन का ध्येय, लक्ष्य, उद्देश्य देखा और उस ओर कदम उठाकर सफलता प्राप्त की।

ध्रुव ने किशोरावस्था में ही कठिन तपस्या कर सिद्धि पाई। प्रह्लाद ने यौवन के प्रारंभ में ही अपने अत्याचारी पिता की निरंकुश यश-लिप्सा तथा खुद को सबसे बड़ा दिखाने के उन्मादी आचरण का प्रखर विरोध कर लोक मानस में आस्था की लहरें फैलाईं। इसके लिए उसे कठोर कष्ट झेलने पड़े। वह अडिग अपनी राह पर डटा रहा। शुकदेव बारह वर्ष की उम्र तक अपनी अगाध विद्वत्ता और परिपूर्ण पवित्रता की साधना कर प्रसिद्ध हो गये थे। मदालसा विवाह से पूर्व ही ब्रह्मविद्याविद् की ख्याति पा गई थी। सीता ने छोटी उम्र में ही शिव धनुष को उठाकर अपने पराक्रम का प्रदर्शन किया था। अपनी युवावस्था में बनवास में संघर्षपूर्ण जीवन जीकर अपनी दृढ़ता का परिचय दिया। पार्वती ने भी युवावस्था में ही अपना कठोर तप पूरा कर अपने ध्येय की प्राप्ति की। सावित्री ने भी इसी उम्र में अपनी तपस्या से मृत्यु के देवता को भी झुकने को बाध्य कर दिया था। गार्गी युवती थी तभी से अपनी ब्रह्म विद्या का प्रभाव जनक की सभा में डाल चुकी थी। बाहुबली ने तरुणाई में ही सिद्धि पाई थी। मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम और योगेश्वर कृष्ण ने जवानी में ही अपने ज्ञान तथा पराक्रम

से लोकमानस में अभय, आदर्श निष्ठा तथा वीरता के संचार और लोक संगठन का कार्य किया था। आम नागरिकों में एक अद्‌भुत शक्ति का उद्‌भव किया था। सामान्य जनों में एक उत्साह का प्राण जागृत किया था। अन्याय के विरुद्ध खड़े होने की ललक पैदा की थी। सामान्य जन को अपनी शक्ति का अहसास कराकर अन्याय के प्रतिकार का रास्ता दिया था।

आदि शंकराचार्य ने अपने जीवन के छोटे काल में ही ज्ञान साधना कर ली थी और बत्तीस वर्ष में ही देश के चारों कोनों में तीर्थ स्थापित कर एक मजबूत संगठन खड़ा कर दिया था। अपनी किशोरावस्था में ही वे सुदूर केरल से चलकर हिमालय में जोशीमठ पहुंचे। उस समय न सड़कें थीं, न आवागमन के साधन, मोटर साईकिल, साईकिल भी नहीं थी, कार-जीप, बस की बात तो दूर। बियाबान जंगल, जिनमें जंगली जानवर बड़ी तादाद में रहते थे। उनको पारकर देश की पैदल यात्रा करते हुए ही वे अपने गन्तव्य स्थान पर पहुंचे। तब भी देश में विभिन्न भाषाएं बोली जाती थीं। उस समय सुविधा के नाम पर क्या रहा होगा इसकी कल्पना आसानी से की जा सकती है ? उस किशोर की इच्छाशक्ति निष्ठा, लगन, ज्ञान, समझ कितनी होगी ? सोचिए ! निडर होकर जंगल, पहाड़, नदी-नाले पार करते हुए उसे कितना समय लगा होगा ? अनेक प्रकार के साधन-सुविधा हमारे सामने फैली पड़ी हैं। फिर भी आज की सुविधाओं, साधनों के बावजूद हम यात्रा करते हुए घबरा जाते हैं।

एकलव्य जब युवक थे तभी धनुर्विद्या में स्वतः दक्षता प्राप्त कर एक चुनौती बन गए थे। बिना साधन के जंगल में एकाग्र तपस्या, तप, कठोर परिश्रम के बल पर उन्होंने धनुष बाण को साधा था। उन्होंने धनुर्विद्या में जो पराक्रम पैदा किया वह अद्‌भुत कौशल का काम था। अभिमन्यु ने जवानी में ही महाभारत संग्राम में छः महारथियों से टक्कर ले उन्हें पराजित किया। एक-एक महारथी को लगातार अपनी सीमाएं याद दिलाने वाला अभिमन्यु अंतिम क्षण तक वीरतापूर्वक डटा रहा। सत्यकाम जाबाल ने अपनी सत्यनिष्ठा और अभयवृत्ति का परिचय किशोरावस्था में ही दिया। नचिकेता के दृढ़ संकल्प, निश्चय ने एक नई कथा ही लिख डाली। चन्द्रगुप्त मौर्य ने जवानी में एक नये महान साम्राज्य की स्थापना कर डाली। मां शारदा ने युवावस्था में ही सिद्धि पाई थी। रामकृष्ण परमहंस ने विविध

पद्धतियों में समान रूप से सिद्धि प्राप्त कर एकत्व की भावना को सशक्त किया। सर्वधर्म समभाव से सर्वधर्म ममभाव तक की यात्रा उनके अनुभव में आई। स्वामी विवेकानन्द ने तरुणाई में ही भारतीय धर्म चेतना का संदेश अनेक देशों में फैलाया। अपने ज्ञान के दम पर दुनियां में एक अमिट छाप बनाई। श्री रमण महर्षि परमसत्ता की गहराइयों का मर्म युवावस्था में ही जान चुके थे।

महावीर स्वामी यौवन के शिखर पर ही परम अर्हंत बन गए थे। भगवान बुद्ध ने परमज्ञान प्राप्त कर प्रकाश फैलाया तब वे युवा ही थे। भरत, विदुर, वेदव्यास, पतंजलि, पाणिनी, पिंगला, अनसूया, भृगु, वशिष्ठ, याज्ञवल्क्य, बृहस्पति, शुक्राचार्य, सनक, सनंदन, सनातन, सनतकुमार, नारद, ऋषभदेव, च्यवन, विश्वामित्र, हरिश्चन्द्र, सगर, भगीरथ, रघु, दिलीप, परशुराम, बाल्मीकि, जनक, निषादगुह, शबरी, अर्जुन, द्रोपदी, युधिष्ठिर, नागार्जुन, चरक, विक्रमादित्य, कालिदास, भास्कराचार्य, रामानुज, तिरुमलुर, नम्मालवार, नामदेव, तुकाराम, ज्ञानेश्वर, तुलसी, शिवाजी, महाराणा प्रताप, भामाशाह, जायसी, दादू, कबीर, रहीम, मीरा, रविदास, रैदास, नानक, गोविन्दसिंह, फतेहसिंह, जोरावरसिंह, अरविंद, गांधी, विनोबा, सुभाष, जयप्रकाश, भगतसिंह, खुदीराम बोस, चन्द्रशेखर, बिस्मिल, ऊधमसिंह, चाणक्य आदि ऐसे कितने ही दृष्टांत दिए जा सकते हैं कि भारत के युवाओं ने राष्ट्रीय उत्कर्ष, गौरव के लिए अपना पुरुषार्थ प्रकट कर रास्ता ढूंढा है तथा अनुभव, दक्षता प्राप्त की है।

इन सब उदाहरणों के बाद हमको युवाओं की भूमिका को सहजता, स्पष्टता से स्वीकार करना होगा ही। इस समय लोकनायक जयप्रकाश नारायण की ये पंक्तियां याद आ रही हैं। ये पंक्तियां प्रासंगिक हैं इसलिए उन्हें यहां उद्धृत करना उपयोगी होगा :

"इस देश का अध्यात्म बूढ़ों की वस्तु नहीं, जवानों की रही है। जब हृषिकेश ने कुरूक्षेत्र में अपने अपूर्व अध्यात्म का पाञ्चजन्य फूंका था, तब वे वृद्ध नहीं, युवा थे और वे थे सारथी, भारत की उत्कृष्ट तरुणाई के रथ के। जब अपनी प्रिया की गोद में नवजात राहुल को सोया छोड़ सिद्धार्थ अपनी अद्वितीय सांस्कृतिक क्रांति के पथ पर चल पड़े थे, तब वे वृद्ध नहीं, युवा थे। विवेकानंद ने शिकागो के रंगमंच पर जब वेदांत के सार्वभौम धर्म का उद्घोष किया तब वे वृद्ध नहीं, युवा थे।

गांधी ने दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद के दावानल में कूद आग्नेय-प्रयोग किया था, तब वे वृद्ध नहीं, युवा थे।

नहीं मित्रो ! अध्यात्म बुढ़ापे की बुढ़भस नहीं है,

तरुणाई की उत्तुंग उड़ान है।''

आज कैसी भी परिस्थिति हो मगर अब भी युवा, तरुणाई पर ही नजर जाती है। वे ही आशा, विश्वास के पात्र हैं। उनमें से ही सदा की तरह चिंगारी उठेगी। युवा ही अपना दायित्व सम्भालेगा। तरुणाई ही नई राह खोजेगी, वही नई राह दिखलाएगी। कितना भी अंधकार गहरा हो रोशनी होते ही उसका अस्तित्व क्षणभर में दूर हो जाता है, चाहे वह सैकड़ों वर्षों का अंधकार हो। आज भी युवा प्रयासरत है। अंधकार, शोषण, अन्याय, असमानता, द्वेष, अलगाव, भ्रष्टाचार, भेद, अत्याचार के विरुद्ध आज भी युवा पीढ़ी से ही आवाज उठ रही है, उठेगी।

''कांप जायेगा अंधेरा एक हरकत पर अभी,
आप माचिस की कोई तीली जलाकर देखिए।''

युवा कौन

युवा शक्ति की मान्यता, उसकी भूमिका, भागीदारी के बारे में, हम सहमत हैं। हम मानते हैं कि युवा शक्ति ही एक सशक्त धारा है जो बदलाव, निर्माण की वाहक है। अब सवाल उठता है कि युवा हम किसे कहें ? युवा है कौन ? युवा की पहचान क्या है ? युवाओं में किनको गिना जाए ? क्या आयु के कारण ही किसी को युवा वर्ग में रख सकते हैं या कुछ अन्य बातें भी हैं जो युवा को युवा बनाती हैं। किसी को हक देती है युवाओं में अपने को खड़ा करने के लिए। अनेक समूह, देश युवाओं को भिन्न-भिन्न आयु से बांधते हैं। पुराने समय को देखें तो हमारे यहां आश्रम व्यवस्था को शतक की आयु मानकर चार भागों में बांटा गया है। पच्चीस-पच्चीस वर्ष का एक भाग। प्रथम भाग ब्रह्मचर्य आश्रम इसे युवावस्था कहा जाता है, दूसरा गृहस्थाश्रम इसे प्रौढ़ में गिनते हैं।

जिसकी आयु 15 से 35 वर्ष के मध्य हो वह युवा है। कुछ मानते हैं कि जिसकी आयु 15 से 45 वर्ष तक हो, वह युवा माना जा सकता है। कुछ का मानना है कि 15 से 21 वर्ष तक आयु वाला ही युवा है। कुछ बचपन से 25 वर्ष तक की आयु को युवावस्था मानते हैं। आयु को लेकर युवा के बारे में अनेक मान्यता है, धारणा है। आयु के सम्बन्ध में एक राय नहीं है। आमतौर पर 35 वर्ष तक की आयु वाले को युवा, तरुण की श्रेणी में रखते हैं।

आयु युवा होने का मुख्य प्रमाण है। आमतौर पर ज्यादातर लोग आयु से ही युवा की पहचान करते हैं। यह होते हुए भी क्या नहीं लगता कि इसके अलावा अन्य प्रमाण भी युवा की कसौटी के लिए आवश्यक हैं। वे प्रमाण, बातें, गुण क्या हैं ? इस पर भी हम विचार करेंगे। इससे पूर्व यह कहने को जी चाहता है कि इस देश में सोलह वर्ष के बूढ़े और बहत्तर वर्ष के जवान के दर्शन भी किए हैं अर्थात् एक और सोलह वर्ष की आयु वाले को देखकर लगता है कि यह

जवान हुआ ही नहीं दूसरी ओर बहत्तर वर्ष के बूढ़े को देखकर लगता है कि इसकी जवानी आज भी कायम है। वह कौन-सी चीज है जो बहत्तर वर्ष में भी व्यक्ति को युवा बनाए रखती है ? उसे युवा, तरुणाई की श्रेणी में खड़ा करती है ? समाज को कहने को मजबूर करती है कि यह युवा है ? हम आगे उन्हीं बातों पर ध्यान देंगे। युवा के गुण लक्षण देखकर हम युवा को जानना, समझना चाहेंगे।

युवा वे हैं जिन्हें समाज युवा समझता है। मन की एक अवस्था के रूप में युवा शब्द की परिभाषा करने में कुछ औचित्य है। मन से भी युवा रहना जरूरी है। मन की अवस्था, मानसिक सोच भी युवा बनाती है। मन की अवस्था का युवा जीवन में एक महत्त्वपूर्ण स्थान एवं भूमिका है। किसी ने ठीक ही कहा है "मन के हारे हार है, मन के जीते जीत"। जीवन में मन का एक बड़ा प्रभाव है। मन की एक अहम् भूमिका है। मन से अनेक बातें बदल जाती हैं।

युवावस्था की सबसे अच्छी बात यह है कि इन दिनों हमारे शरीर के साथ-साथ हमारे आदर्श भी जवान होते हैं। जिस आदर्श को ऊँचा मान लिया, जिस कार्य को पवित्र मान लिया, जिस मुद्दे को अपना लिया, उसके लिए कुछ भी करने की तड़फ या तैयारी होती है। अपने आदर्श के लिए आगा-पीछा कुछ नहीं सोचना। एक बार जिसको मान लिया उसके लिए पूरी शक्ति से लग जाना युवा की खासियत है। युवा अपना सर्वस्व उस पर न्यौछावर करने की तैयारी रखता है। आदर्श तक पहुंचने के लिए वह सब कुछ करने को तैयार रहता है। इसलिए अनुभव की कमी के बावजूद भी बदलाव में युवा की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है।

युवा अपना 'आज' (वर्तमान) 'औरों के' (सबके) 'कल' (भविष्य) के लिए न्यौछावर करने की तैयारी रखता है। वह वर्तमान के बोझ को नहीं ढोता है। वह वर्तमान को जीना चाहता है। अपना 'वर्तमान' समाज, राष्ट्र, समूह, आदर्श के लिए (जिसे वह मानता है) लुटा देता है। अपना वर्तमान लुटाने में झिझक, संकोच, रुकावट नहीं महसूस करता। भविष्य की उपज के लिए अपने वर्तमान को दांव पर लगा देता है। वर्तमान उसके लिए रुकावट, अड़चन, डर नहीं बल्कि एक अवसर होता है। वर्तमान को वह अवसर एवं माध्यम मानता है। वह वर्तमान एवं भविष्य की वैसी चिन्ता नहीं करता जैसी

तथाकथित समझदार लोग करते हैं। वह भविष्य और वर्तमान का झूला नहीं झूलता है। वह वर्तमान में ही अपने अरमान पूरा कर लेना चाहता है।

युवा अधिक उन्मुक्त, निश्छल, संवेदनशील होता है। वह व्यवस्था परिवर्तन की चाह रखता है। जारी व्यवस्था में वह भारी अन्याय महसूस करता है और इसमें स्वयं की भागीदारी को रोकना चाहता है। अन्याय के खिलाफ वह आवाज उठाता है। अन्याय के प्रतिकार की क्षमता एवं ताकत रखता है। अन्याय के प्रतिकार के लिए जूझता है। अकेला होने पर भी अपनी आवाज को बुलन्द करता है। वह टूटना पसन्द करता है मगर झुकना नहीं। सब तरह के कष्ट सहकर भी वह अपनी बात पर डटा रहता है। कितनी भी कठिनाई आए वह सीना ताने आगे बढ़ने का प्रयास करता है। उसे अपनी जीत सामने ही नजर आती है। कठिनाई में भी वह सुख एवं आनन्द महसूस करता है। उसे कष्ट, कठिनाई तोड़ नहीं सकते। कठिनाइयों से भी वह शक्ति, ऊर्जा प्राप्त करता है। कठिनाई, दिक्कत, कष्ट, रुकावट को वह जीवन का हिस्सा स्वीकार कर उसे गले लगाता है। कठिनाई सहकर वह और दृढ़निश्चयी बनकर निकलता है और अधिक संकल्प से अपने ध्येय की ओर बढ़ता है। व्यवस्था जितना दबाती है वह उतना ही उसके विरुद्ध खड़ा होता जाता है न व्यवस्था को मानता है, न उसे चलने देना चाहता है। वर्तमान (जारी) व्यवस्था का वह मुकाबला करता है उसे मानता नहीं, उससे आंखें नहीं मूंदता। अपने को व्यवस्था से दूर ले जाकर खड़ा नहीं करता बल्कि उससे टकराने की चाह रखता है। उसे बदलने की इच्छा से कार्य करता है।

चुनौती स्वीकार करना, चुनौती की तलाश करना युवा अपना भाग्य मानता है। चुनौती उसे डराती, भगाती नहीं। चुनौती से पलायन करना युवा का काम नहीं। उसकी संस्कृति, स्वभाव में यह नहीं आता कि वह चुनौती देखकर घबराए, दुबक जाए। वह सहर्ष चुनौती को अपनाता है, उससे हाथ मिलाता है। युवा अपनी प्रासंगिकता हर समय बनाए रखता है। वह कभी 'भूत' नहीं बनता। वह वर्तमान होता है। वह चुकता, बीतता नहीं है। उसकी अपनी उपयोगिता सदैव बनी रहती है। उसका अस्तित्व कायम रहता है। वह समाज की मान्यता, सहायता

का दास (गुलाम) नहीं होता। वह अपनी मान्यता एवं सहायता के दम पर आगे बढ़ने की तैयारी रखता है। कोई क्या कहेगा ? यह सवाल उसके सामने नहीं रहता। मुझे क्या करना है, यही प्रश्न उसके समक्ष रहता है। वह करने की तैयारी में लगा रहता है।

युवा के सामने नया युग, नई सोच, नये मार्ग, नये साधन, नई मानसिकता, नये विचारों के द्वार खुले होते हैं। वह नये युग, नई सोच, नये मार्ग, नये साधन, नई मानसिकता, नये विचारों के सपने देखता है। उन सपनों को साकार करने के लिए वह जुट जाता है। जिसे आम व्यक्ति सामान्य तौर पर नहीं विचारता, सोचता, उसे युवा सोचता है, उसकी कल्पना करता है। वह नई-नई कल्पनाएं करता है। हम कह सकते हैं कि युवा वह है जो दिन में भी सपने देखता है। वह खुली आंख से सपने देखता है। सपने देखने की क्षमता युवा में भरपूर होती है। वह यथास्थितिवाद से पीड़ित नहीं होता। वह सपनों की दुनिया में रहता है। वह सपनों में बढ़ता है। सपने लेने की ताकत युवा की एक विशेष स्थिति है। वह बंधकर नहीं रह सकता। बड़े-बड़े युवा एवं अन्य स्वप्नदर्शी दुनिया में आगे आए, युवकों से ही उन्होंने रास्ता आसान करवाया। युवकों के दम पर ही उन्होंने सफलता प्राप्त की। युवक ही उनकी शक्ति एवं माध्यम बने।

युवा बनी-बनाई सीमाओं में नहीं बंधता। वह मुक्त रहता है। उसके सामने लेकिन, परन्तु, अगर, मगर, चूंकि, क्योंकि, इसलिए के सवाल नहीं उठते, वह इन्हें नहीं मानता। वह रास्ता खोजना चाहता है। वह रास्ता खोज लेता है। हर परिस्थिति में अपनी राह खोजता है, बनाता है। अपने को बचाने के लिए बहाने नहीं ढूंढता। वह जो करना चाहता है, उसे करता है। उसके लिए कुछ भी त्याग करना पड़े, इसकी चिन्ता वह नहीं करता। उसके हौसले बुलन्द होते हैं। वह आगे कदम उठाता है, चलता चला जाता है।

अब हम युवा के गुणों को संक्षिप्त में इस प्रकार देख सकते हैं। जिसमें उत्साह, लगन, दृढ़निश्चय, निष्ठा, जोश, भावना, संवेदना, मस्ती, चेतना, प्रेरणा, जागरूकता, निर्भयता, जुझारूपन, पक्का इरादा, सक्रियता, गति हो। जो परिवर्तन की चाह रखता हो। जिसमें सपने देखने की ताकत हो। परमार्थ की भावना से जो काम करे। स्वार्थ से ऊपर उठने की शक्ति, चुनौती स्वीकार करने की ऊर्जा, जोखिम

उठाने का जो मादा रखता हो। झंझावातों से टकराने की तमन्ना की उड़ान भर सकता हो। कायरता जिसके पास फटकना भी पसन्द न करती हो। साहस जिसकी पूंजी हो। साहसिकता के प्रति उसका विशेष रूझान हो। समता, स्वतंत्रता, बंधुता, सहभागिता की ओर जिसके कदम उठते हों। नवनिर्माण, सर्जनशील, रचना की ओर जिसके कदम चलें। उसे सुख, सुविधा का लालच नहीं हो। वह स्वार्थ, अपने भले, अपनी सुविधा की झंझट में नहीं पड़ता बल्कि साहस के अवसर खोजता है। ढोंग, दिखावे के खिलाफ अपनी आवाज बुलन्द करता है। जड़ विचार का विरोधी होता है। त्याग, बलिदान में अपनी उपयोगिता महसूस करता है। खुदगर्जी, दुनियादारी से प्रभावित नहीं होता इससे दूर, ऊपर उठकर काम करता है। जिसका खून खौलता है। जिसके खून में उबाल आता है। जो संकल्प लेने को उतावला है। जो अपने लिए सिद्धान्त बनाकर नहीं बैठता बल्कि सिद्धान्त के लिए न्यौछावर होने को तैयार है। संघर्ष से जो नहीं डरता। जो अपना आज औरों के कल के लिए न्यौछावर कर दे। जिसमें आस्था, आत्मविश्वास पूरा भरा हो।

युवा में प्रतिबद्धता होती है। युवा मात्र व्यावहारिक पक्ष नहीं देखता, वह अव्यावहारिक कही जाने वाली बातों में रुचि लेता है। अव्यावहारिक बातों में रुचि युवा ही ले सकता है। अव्यावहारिक को व्यावहारिक करने की ताकत युवा में ही है। वह अव्यावहारिक शब्द से घबराता नहीं है। अव्यावहारिक को भी वह उसी मस्ती से देखता है। युवा मात्र सफलता के पीछे नहीं दौड़ता। सफलता, अपनी सफलता उसका लक्ष्य नहीं होता। युवा फायदा उठाने का अवसर नहीं ढूंढता। युवा डंके की चोट पर काम करता है। वह महत्त्वाकांक्षी नहीं होता। प्रलोभन उसे आकर्षित नहीं करता। वह मजबूरी में नहीं जीता। वह जीवन को जीता है। जीवन उसके लिए अवसर है, पराक्रम है, कुछ करने का माध्यम है। युवा 'पागलपन' करने की हिम्मत रखता है। उसका दिल व्यापक एवं खुला होता है। उसमें अपनापन होता है। वह संवेदनशील होता है। वह सबको अपनाने की क्षमता रखता है। वह हरदम ताज़गी महसूस करता है। सक्रियता, कुछ करने की चाह उसकी रग-रग में भरी रहती है। जीवन और परिवर्तन में उसका विश्वास होता है।

युवा विरोध/विद्रोह

युवा शक्ति, युवा कौन इस पर हमने विचार किया। अब हम युवा पीढ़ी के बारे में सोचेंगे। प्रारंभ से ही युवा विद्रोह, विरोध करता रहा है। उसका आक्रोश किसी न किसी रूप में सामने आता रहा है। यह ठीक है कि युवा विरोध, विद्रोह, रोष, आक्रोश के ढंग समय-समय पर बदलते रहें हैं। कभी किसी रूप में, कभी किसी रूप में। देश, काल, परिस्थिति अनुसार विद्रोह के रूप बदलते रहे हैं। विरोध कहीं गुस्से में निकलता है, कहीं संघर्ष में, कहीं नकारने में तो कहीं स्वीकारने में, कहीं पहनावे में तो कहीं खाने में, कहीं दिखावे में और कहीं नकारात्मक रूप में ही विरोध नजर आता है। यह विरोध रचनात्मक भी हो सकता है और विध्वंसात्मक भी, मगर प्रारंभ से युवा का विरोध प्रकट होता रहा है, इसमें दो राय नहीं।

एक तरफ युवा विरोध प्रकट करता है दूसरी तरह युवा को भी विरोध का सामना करना पड़ता है। आज की युवा पीढ़ी को ही विरोध का सामना नहीं करना पड़ रहा बल्कि इतिहास उठाकर देखेंगे तो पायेंगे कि युवा पीढ़ी का विरोध भी हमेशा से रहा है। युवाओं से सदैव समाज ने अपेक्षाएं रखी हैं और उस समय विशेष के समाज ने युवा को निकम्मा, बेकार, अव्यावहारिक, नालायक, गैर-जिम्मेवार, आवारा, पलायनवादी, किसी की न सुनने वाला, अनुशासनहीन, अनुपयोगी, अनुभवहीन, निष्क्रिय, सुस्त, ढीला, उच्छृंखल, झगड़ालू, स्वार्थी, धीरजहीन, मूल्यहीन, क्रोधी, फैशनेबल, अप्रासंगिक माना है।

उस समय विशेष के समाज को देखें तो पाते हैं कि समाज युवाओं का विरोध कर रहा है। उनके हर कार्य को शंका, संदेह के घेरे में रखकर देखता है। युवाओं की गतिविधियां वह सहन नहीं कर पाता। सही कार्यों को भी अलग दृष्टि से देखता है। समाज युवाओं को चाहता है कि उसी लकीर पर चलें जिस पर समाज चल रहा है, चलना चाहता है। वह व्यवस्था के अनुकूल चलने की चाह रखता है। वह किसी

भी परिवर्तन को आसानी से सहन नहीं कर पाता। वह अपने अनुभव एवं आदत को ही उपयोगी एवं सार्थक मानता है। लीक पर चलने का आग्रह वह सबसे चाहता है। उसे लीक से हटकर चलने वाला पसन्द नहीं है। इसलिए युवा का विरोध सदैव समाज के साथ नजर आता है। वह चाहे कोई भी समय रहा हो। इतिहास के पन्नों पर नजर डालने पर स्पष्ट दिखता है कि युवाओं के प्रति लोगों का आक्रोश, विरोध, नाखुशी सदा जाहिर रही है। सुकरात, अरस्तू, प्लेटो, चाणक्य, विवेकानन्द सबने युवाओं के सामने सवाल खड़े कर पूछा कि क्या हो गया युवाओं को ? इसी तरह आपको अनेक उदाहरण मिलेंगे कि युवा कुछ नहीं कर रहा। वह ठीक नहीं है। यह उसे हमेशा से सुनना पड़ा है। चाहे उसने सही किया या गलत मगर उसको यह विरोध झेलना पड़ा है।

एक तरफ युवा का विरोध व्यापक तौर पर दिखता है, दूसरी ओर युवा भी किसी न किसी रूप में अपना विरोध प्रकट करता रहा है। यह किसी देश, समाज विशेष में नहीं चल रहा दुनिया भर का यही हाल है। जिस प्रकार अन्य लोगों का विरोध युवाओं के प्रति नजर आता है उसी तरह युवा मन का विरोध भी अन्य लोगों के प्रति नजर आता है। हर समय किसी न किसी रूप में यह विरोध प्रकट भी होता रहा है। कभी ज्यादा, कभी कम मगर विरोध समय-समय पर फूटता रहा है। दुनिया में अलग-अलग रूप में यह सामने आया। आज भी अनेक रूप में सामने आ रहा है। हम कह सकते हैं कि युवा विरोध के ढंग समय-समय पर अलग-अलग प्रकट हुए हैं।

कहीं युद्ध की तैयारी में लगकर, युद्ध करके युवाओं ने अपना विरोध प्रकट किया तो कहीं युद्ध के विरुद्ध प्रेमभाव के गीत गाकर। कहीं बालों के नये-नये ढंग में। कहीं बड़े बाल (केश) बढ़ाकर, कहीं बाल कटवाकर। कहीं विलक्षण वस्त्र पहनकर विरोध का ढंग अपनाया। कम वस्त्र, ज्यादा वस्त्र, वस्त्रों के डिजाइन, स्टाइल, तरीके बदलकर। कहीं वस्त्र फाड़कर पहनने में बदलाव व विरोध का स्वरूप दिखता है। कहीं खुलेआम नशे की आदत डालकर या विभिन्न तरह के नशों में अपने को डूबोकर, अपना आक्रोश प्रकट करता है। कहीं मूल्यहीन तरीकों को अपनाकर अपना गुस्सा दिखाता है। कहीं मुक्त सम्बन्धों की बात करता है तो कहीं आपसी सम्बन्धों के नये-नये ढंगों को मान्यता देना चाहता है। कहीं अपने को निष्क्रियता में डालकर

तथाकथित मस्ती का जीवन जीने की ओर दौड़ता है। कहीं संघर्ष के लिए अवसर ढूंढने का काम करता है। कहीं अपनी ओर लोगों का ध्यान आकर्षित करने के लिए बेकार, अनुपयोगी, ऊल-जलूल काम भी करता है। कहीं अपनी शक्ति, ऊर्जा का सही उपयोग न कर पाने पर विध्वंसात्मक कदम उठाता है। कभी-कभी तो बिना विचारे मात्र अपनी शक्ति को कहीं पर लगाना है, इसलिए बेमतलब की तोड़-फोड़, लड़ाई-झगड़े में अपने को लगाता है। कहने का तात्पर्य है कि वह कहीं न कहीं, गलत-सही, उचित-अनुचित, उपयोगी-अनुपयोगी, कारगर-बेकार, विध्वंस-रचनात्मक कदम पर अपने को जोड़ता है।

युवा पीढ़ी विरोध, विद्रोह करती रही है तथा उसका भी विरोध लगातार होता आ रहा है। यह विरोध विभिन्न रूपों में दोनों ओर से प्रकट होता रहा है। यह बात अलग है कि इन दोनों ओर के विरोध की उपयोगिता कितनी सही है ? युवाओं द्वारा विरोध हो या युवाओं का विरोध दोनों अनेक बार बेमतलब, बेकार, अनुपयोगी मात्र अपनी खीझ निकालने हेतु ही रहे हैं। जब इस प्रकार के विरोध सामने आते हैं तो उनका कोई फायदा, लाभ नहीं बन पाता। यह विरोध के लिए विरोध बनकर रह जाता है। बल्कि यह विरोध, टूटन, जकड़न पैदा करता है, बढ़ाता है। समाज में खाई बढ़ती है। पीढ़ियों में इससे अलगाव, दूरी बढ़ती है। एक दूसरे के प्रति संदेह, शंका, अविश्वास, नफ़रत, गुस्सा, असम्मान बढ़ता है और धीरे-धीरे असंवाद की स्थिति बनती है जो समाज के लिए घातक होती है। इस असंवाद की स्थिति को तोड़ना कठिन काम हो जाता है।

युवा पीढ़ी का विद्रोह नकारात्मक ही नहीं होता वह सकारात्मक, उपयोगी, जरूरी एवं कल्याणकारी भी होता है। सचमुच तो युवा की जो परिभाषा मानी जाती है, जिसे बदलाव का वाहक कहकर पुकारा जाता है। उसका आक्रोश, विद्रोह, रचनात्मक, परिवर्तनकारी, सर्जनात्मक होता है। वह विरोध से परिवर्तन लाना चाहता है, लाता है। वह नये मार्ग खोजता और खोलता है। नये मूल्यों की स्थापना करता है। समाज में मूलभूत परिवर्तन की चाह रखता है। संवाद के रास्ते खोलता है। संवेदना की बढ़ोत्तरी करता है। समाज, राष्ट्र, मानवता के लिए अपनी जिम्मेवारी का अहसास करता है। अपने कर्त्तव्य पालन के लिए तप, साधना, तपस्या, श्रम, मेहनत करता है। परमार्थ की भावना उसे और आगे बढ़ाती है। वह नये कीर्तिमान,

स्तम्भ खड़े करता है। वह प्रकाश स्तम्भ या प्रकाश पुंज के रूप में उभरता है। जो लम्बे समय तक स्मृति पटल पर छाया रहता है। जिसको भुलाया नहीं जा सकता। उसका अपना अस्तित्व नजर आता है। उसकी अपनी एक पहचान बनती है। उसकी समझ और पकड़ स्पष्ट नजर आती है। वह नवनिर्माण के द्वार खोलता है। उसे कष्ट, दुःख झेलने पड़ते हैं। वह उस समय "पागल" के रूप में देखा जा सकता है। वह व्यवस्था, व्यवहार (तथाकथित) से अलग राह अपनाता है। उसे एक सुख, आत्मसंतोष की अनुभूति होती है। वह अपनी मस्ती, अपनी राह, अपनी चाल में आगे बढ़ता है। वह अटूट निष्ठा, लगन से अपने ध्येय को प्राप्त करने में लालायित रहता है।

आज का युवा

आज का युवा व्यावहारिक नामक शब्द के ज्यादा समीप आ रहा है। व्यावहारिकता अब उसका दृढ़ विश्वास बनता जा रहा है। सम्पत्ति, प्रतिष्ठा, पद को वह एक सच्चाई मानता है। कुछ प्राप्त करने के लिए, कुछ अलग से करना पड़ता है, उसकी यह धारणा मजबूत हो रही है। सीधे रास्ते से काम हो सकता है, यह विश्वास नहीं रहा है। कुछ करना या करवाना है तो इधर-उधर की राह अपनानी ही होगी। कौशल, लियाकत, योग्यता पर विश्वास घटता जा रहा है। छोटे रास्ते से काम निकालना आसान नजर आता है। येनकेन प्रकारेण "मेरी सफलता, मेरा जीवन, मेरी प्रतिष्ठा, मेरा पद, मेरा पैसा" इस पीढ़ी का सपना बन रहा है। अनुचित लाभ अब कोई अपशब्द, बुरा शब्द नहीं है। राजनीति से दूरी बढ़ रही है जो खतरनाक साबित हो सकती है। सामाजिकता नये रूप में आ रही है। हमारा से मेरा का सफर तेज हो रहा है। व्यक्तिनिष्ठ, व्यक्ति केन्द्रित "स्व" तक अपने को समेटने की तैयारी नजर आ रही है। "मैं और मेरा" एक आत्मघाती कदम हो सकता है। लक्ष्य तक पहुंचना है साधन चाहे कुछ भी प्रयोग किए जाएं। साधन का महत्त्व घट रहा है या साधन का कोई महत्त्व नहीं है। युवाओं के आदर्श तेजी से बदल रहे हैं।

इस पीढ़ी को किसी की परवाह ही नहीं है। योग्यता का महत्त्व समाप्त प्रायः लगता है। युवा बदलाव नहीं चाहते बल्कि केवल इसका फायदा उठाना चाहते है। सूचना, जानकारी व्यापक रूप से बढ़ रही है मगर ज्ञान की कमी एवं हृदय की संकुचन भी बढ़ रही है। कुछ समय पहले जो कार्य करते हुए युवा शर्माते या छुपाते थे उन्हें वे आज खुले तौर पर ही नहीं बल्कि डंके की चोट पर करते हैं। मूल्य कोई आवश्यकता नहीं है। मूल्यों को रुकावट मानने का मन बन रहा है। मूल्य बोझ के रूप में देखे जा रहे हैं। महत्त्वाकांक्षा तेजी से बढ़ती जा रही है। धैर्य, धीरज टूट रहा है। जब महत्त्वाकांक्षा बढ़ जाती है तो धैर्य रह भी नहीं सकता। बाजार से युवा भी प्रभावित हो रहा

है। बाजार के अनुकूल ही अपना रुख बना रहा है। पैसा कमाना ध्येय हो रहा है। पैसे के पीछे दौड़ बढ़ रही है। असुरक्षा, एकाकी भाव, स्वार्थ और अधिक गम्भीर स्थिति पैदा कर रहा है। युवा "मैं" में ही घिरता जा रहा है। प्रतिस्पर्द्धा, ईर्ष्या, बेकार दौड़भाग, टांग खींचने की प्रवृत्ति बढ़ रही है। आराम, सुख, नींद युवा की मजबूरी बन रही है। आकर्षण के प्रति भयंकर झुकाव हो रहा है, नए-नए वाहन, नये-नये साधन, नये-नये आकर्षण युवा को आकर्षित कर रहे हैं। वह इन्हें अनिवार्य आवश्यकता मानता है।

आज के सभी सुख युवा जुटा लेना चाहता है। कम-से-कम काम करके ज्यादा-से-ज्यादा कैसे प्राप्त किया जाए ? देता के बजाय युवा का चित्र लेता का बन रहा है। वह जितना लेता है उससे कम देना चाहता है। वह ऋणी, कर्जदार बनने में झिझक महसूस नहीं करता है। वह अपने को असहाय मानने लगा है। मैं क्या कर सकता हूं? मेरी ताकत ही क्या है ? मैं किस लायक हूं ? मेरी उम्र ही क्या है? इन परिस्थितियों में मैं क्या कर पाऊँगा ? उसका विश्वास डगमगाया है। वह अपने को कमजोर मानता है।

वह अपनी दुनिया में रहना चाहता है। अपने चारों ओर एक जाल खड़ा कर रहा है। उस जाल में और अधिक फंसता जा रहा है। आधुनिक समाज, उपभोक्तावाद की दौड़, तथाकथित विकास की चपेट में फंसता जा रहा है। इसमें उसे आनन्द महसूस हो रहा है। समझौतावादी प्रक्रिया उसे समझ आ रही है। समझौते के आधार पर आगे बढ़ना चाहता है। आगे बढ़ने के लिए किसी भी हद तक समझौता कर सकता है।

सामाजिक सम्बन्ध कम हो रहे हैं। लगाव, अपनेपन की कमी हो रही है। मेरा संसार, मेरा देश, मेरा समाज, मेरा क्षेत्र, मेरा गांव यह उसे नहीं लगता। और यह टूटन धीरे-धीरे परिवार के रिश्तों तक नजर आ रही है। पारिवारिक सम्बन्धों पर जबर्दस्त प्रभाव पड़ रहा है। रिश्ते कमजोर पड़ रहे हैं। इससे व्यक्तिवाद उभर रहा है।

युवा अब संघर्ष, पराक्रम के अवसर नहीं ढूंढ रहा। वह शांति से सीमित बनकर रहना चाहता है। मुझे किसी से क्या लेना-देना ? मुझे क्या मतलब पंजाबी में कहे तो 'सानू की' ? 'मुझे क्या मतलब' की बीमारी युवा पीढ़ी में फैलती जा रही है। देश, समाज में जो कुछ

हो रहा है वह उसका काम नहीं है। उसे सत्ता, राजनीति, समाज, बदलाव से मतलब नहीं है। उसका चिन्तन सामाजिक न होकर अपने तक सीमित होता जा रहा है। वह अपने दायरे में सिकुड़ता जा रहा है।

आज की युवा पीढ़ी तरुणाई के हिलोरे में झूलने से पहले ही अधेड़ बनने लगी है। वह अपने को ज्यादा जिम्मेवार, समझदार मानने लगी है। तरुणाई के गुणों के बजाय अधेड़ होने का बोझ उसने अपने ऊपर लाद लिया है। उसकी "मस्ती" में अन्तर पड़ गया है। मर्यादा, मूल्य, धुन के पक्के युवा अब नहीं बनना चाहते। सामाजिक-न्याय, राष्ट्रीय सवाल, मूल्य बोध, सांस्कृतिक-आध्यात्मिक समझ युवाओं के लिए कोई महत्त्व नहीं रखते।

इस पीढ़ी ने सपनों को चूर-चूर होते देखा है। वादों को खंडित होते देखा है। दिग्गजों को धूल चाटते देखकर निराशा और बढ़ी है। चारों ओर से आस्था खत्म होने का दौर चल रहा है। विज्ञान और तकनीक के सहारे सांस्कृतिक-सामाजिक मूल्यों पर हमला बोला जा रहा है। आकर्षक विज्ञापन एवं भौंडे कार्यक्रमों द्वारा युवा पीढ़ी में जहर घोला जा रहा है। उनकी बची-खुची आस्थाओं को दफन किया जा रहा है। उन्हें उपभोक्तावाद के जाल में ऐसा फंसाया जा रहा है कि वह उसी मकड़जाल में फंसकर रह जाए। उसके अपने चिंतन, मनन, आचरण, सोचने की शक्ति को कुंठित किया जा रहा है। उसे नकलची बनाने की प्रक्रिया जारी है। उसकी अपनी सोच को समाप्त किया जा रहा है। उसमें कुंठा विकसित हो रही है।

आज के युवा के सामने प्रेरक शक्ति, आदर्श क्या है ? अधिकतर युवा के आदर्श, प्रेरक शक्ति को जानकर एक दुःखद आश्चर्य होता है। आप स्वयं ही इस तरह की जानकारी, सर्वेक्षण करके एकत्र कर सकते हैं। अनेक लोगों ने समय-समय पर सर्वेक्षण, जानकारी एकत्र भी की है। अपने पास-पड़ोस, आस-पास में आप स्वयं भी देखते, समझते हैं। आपके सम्पर्क में जो युवा आ रहे हैं उससे भी आप अंदाज लगा सकते हैं। आज का युवा मानता है कि बगैर कुछ किए वह उच्चतम पद पर पहुंच जाए। राजनैतिक नेता बनने की एक इच्छा उसके मन में है। सत्ता, सम्पत्ति, पद, प्रतिष्ठा, अधिकार सब इसमें खूब मिलने की सम्भावनाएं बनी हैं। सेवा, त्याग के बिना भी आज

नेतृत्व में आया जा सकता हैं। यह रास्ता उसे आसान नजर आता है। नामी खिलाड़ी बनने की चाह भी अनेक युवा रखते हैं। एक सफल व्यापारी, उद्योगपति बनने के सपने उनके सामने हैं। सम्पत्तिवान बनने की चाह लिये सुख, सुविधा के ढेरों के ऊपर अधिकार रखना चाहते हैं। पैसा, सम्पत्ति साफ सुथरे ढंग से कैसे आए इसका ख्याल, चिन्ता नहीं है। गलत-सलत, उल्टे-सीधे, कानूनी, गैर-कानूनी, सही-गलत, श्रम या चालबाजी से जैसे भी आए पैसा आए। अधिकतर युवा अपना कैरियर बनाना चाहते हैं। सुखद विवाहित जीवन जीने का मोह पाले रखते हैं। समाज सेवा, पराक्रम, प्रसिद्धि की तरफ बहुत कम लोगों का मन है।

बड़ी संख्या में शिक्षित युवा विदेश जाने की तैयारी में है, जाना चाहता है। सरकारी अधिकारी बनने की चाह रखने वाला युवा का बड़ा प्रतिशत है। उद्यमी बनने को बहुत कम तैयार हैं। अधिकतर छात्र नौकरी के लिए पढ़ रहे हैं। पढ़ लेंगे तो नौकरी मिल जाएगी। अच्छे विवाह के लायक हो जाएंगे। दहेज की मांग बढ़ जाएगी। इन शिक्षित युवाओं को रिश्वत आदि देने में कोई रुकावट नहीं है। पूछने पर स्पष्ट कहते हैं कि जरूरत पड़ने पर रिश्वत आदि से काम करवाने में क्या हर्ज है। विवाह पूर्व यौन सम्बन्धों को गलत न मानने वाले युवाओं की संख्या बढ़ रही है। आगे बढ़ने के लिए सैक्स अपील का इस्तेमाल करना ठीक है, इसको मानने वाले युवा भी बढ़े हैं। नशा आज बुराई नहीं है ऐसी मान्यता तो बढ़ रही है बल्कि नशा प्रतिष्ठा, सम्मान का सूचक भी बन रहा है। नशे के नये-नये साधन प्रचलित हो रहे हैं। स्वार्थ के लिए किसी हद को भी पार करने की तैयारी का मन युवा पीढ़ी में बहुतों का बनता जा रहा है। यह एक भयंकर खतरा है। सब मूल्य ताक पर रखकर कुछ भी करने की तैयारी, यह संख्या कितनी भी कम आंके मगर इसकी ओर बढ़ना बहुत ही आत्मघाती कदम है। आज इसको सभी आचरण में चाहे नहीं ला रहे मगर इस ओर झुकाव बढ़ रहा है। शब्दों में, मन में इसे स्वीकार किया जा रहा है। इस ओर आंखें मूंदकर नहीं रहा जा सकता। इस खतरे का आभास जागरूक लोगों को तुरन्त करना चाहिए।

युवाओं का मनमाना उपयोग, दुरुपयोग भी बढ़ रहा है। अंधी दौड़ में ज्यादा लोक शामिल हो रहे हैं। फिल्मी, कलाकार, मॉडल्स, आधुनिक संगीतज्ञ, नर्तक आज के युवा के चहेते एवं आदर्श हैं। शरीर,

देह के प्रति आकर्षण बढ़ा है। मन, आत्मा की शुद्धि का सवाल बहुत दूर है। शरीर भी हृष्ट-पुष्ट नहीं, दिखने में आकर्षक, सुन्दर, लुभावना, फैशनेबल चाहिए। शरीर के बाहरी रूप पर विशेष गौर करने की होड़ बड़े शहरों में ही नहीं छोटे-छोटे कस्बों में भी बढ़ी है। ब्यूटी पार्लर जैसी दुकानों की बाढ़ आई लगती है। आरोग्य व स्वास्थ्य से इसका सम्बन्ध, रिश्ता नहीं है। आरोग्य, स्वास्थ्य के प्रति सजगता, आकर्षण, सावधानी हो तो वह स्वागत योग्य, प्रशंसनीय कार्य है।

खान-पान, वेश-भूषा, बोलचाल, रहन-सहन में तेजी से परिवर्तन आ रहा है। पाश्चात्य दौड़, उपभोक्तावाद, विज्ञापन, बाजार, विकास की शैली ने एक अलग जीवन पद्धति खड़ी कर दी है। इस जीवन पद्धति की ओर युवा विशेषकर खिंचा जा रहा है। चकाचौंध के कारण वह इसकी अच्छाई-बुराई, गुण-दोष पर ध्यान नहीं दे पा रहा है। इसे अपनाना वह अपनी खुशकिस्मती मान रहा है। इस जीवन पद्धति के लिए वह तड़प रहा है, लालायित है। इसे अपनाने के लिए वह दौड़ रहा है। इसे प्राप्त करने में कठिनाई हो तो वह तड़पता है, निराशा, थकान महसूस करता है। साधन न होने पर, साधन की कमी होने पर वह भी इस ओर कदम बढ़ा रहा है। समाज में एक बड़ी खाई इससे बढ़ रही है। युवाओं में भी एक बड़ी खाई महसूस की जा सकती है, देखी जा सकती है। सफाई, दबाव, मोहित करना, उलझाए रखना, प्रदर्शन, फैशन, लहर, वातावरण को खड़ा करने के साथ-साथ पत्र-पत्रिका, दूरदर्शन, रेडियो, वस्त्र, विज्ञापन आदि के माध्यम से भी एक प्रभामंडल खड़ा किया जा रहा है जिसकी चकाचौंध में युवा भरमा गया है, घूम रहा है।

एक ओर ऐसी स्थिति को देखकर लगता है कि यह युवा को क्या हो गया है? वह कहां जा रहा है? क्या उसने सोचना, समझना बंद कर दिया है? क्या उसने इसे अपनी नियति ही मान लिया है? क्या उसने समर्पण कर दिया है? क्या वह थक गया है? निराशा ने उसको कहीं उलझा दिया है? लड़ते-जूझते, संघर्ष करते हुए वह थक गया है क्या? क्या वह अब आराम की जिन्दगी जीने की चाह रखने लगा है? उसके मूल्य, गुण बदल गये हैं क्या? उसका पराक्रम, चुनौती स्वीकार करने का स्वभाव समाप्त हो गया है क्या? अब वह अपनी परिभाषा, गुण भूल रहा है क्या? क्या उसे अपने इतिहास का भान नहीं रहा है? क्या वह अपनी विरासत की भी याद नहीं कर पा रहा है? इन क्या का जवाब ढूंढना ही युवा का काम है।

आज भी युवा सक्रिय—अभी भी जिन्दा है

वर्तमान स्थिति को देखकर चिंता होना स्वाभाविक है। आज युवा पीढ़ी में मात्रा की दृष्टि से अनेक बातों ने अपनी पैठ बनाई है। संख्याबल के आधार पर युवाओं का रुख देखकर बड़ा खतरा नजर आता है। समस्या की गम्भीरता से आंखें नहीं बंद की जा सकती हैं। इन सबके बावजूद आज भी अनेक युवा हैं जो अपने "स्व", पहचान को बचाये हुए हैं और युवापन के जोश में वही सपने देख रहे हैं। व्यावहारिकता जिन्हें अपने जाल में नहीं फंसा पाई है। अभी भी वे अव्यावहारिक कहे जाने वाले काम, बदलाव, परिवर्तन की राह पर चल रहे हैं। इतनी ज्यादा स्थिति खराब हो रही है फिर भी संख्या चाहे थोड़ी कम हो मगर आज भी सक्रिय युवा अनेक स्थानों पर मिल जायेंगे। अपनी विरासत, परम्परा, गुण के अनुकूल युवा जूझ रहा है। रास्ते खोज रहा है। अपनी प्रासंगिकता बनाए हुए हैं। हम नहीं कह सकते कि धरती वीरों से रिक्त हो गई है। युवा नजर नहीं आता यह आरोप अगर हम लगाते हैं तो इसमें अपना स्वयं का दोष भी है। हमने उसे देखना, जानना नहीं चाहा। हम उसकी पहचान नहीं करते। उसे मान्यता नहीं देते। समाज में हम सतर्क, सावधान, जागरूक होकर चलें, निकलें तो हमें अनेक जगह तरुणाई के दर्शन होंगे।

आज आंदोलन, अभियान, समूह की सक्रियता व्यापक तौर पर नजर नहीं आ रही है। छोटे-छोटे समूहों में अनेक स्थानों पर काम हो रहा है। व्यक्तिगत स्तर पर युवा यहां-वहां अपने सपनों के साथ प्रयोग में लगे हैं। देश के विभिन्न क्षेत्रों, हिस्सों में अपनी शक्ति अनुसार युवा मैदान में है। वह सीना ताने खड़ा है। वह समस्याओं को पीठ दिखाने को तैयार नहीं है। वह उससे दो-दो हाथ करने की ताकत के साथ मुकाबला करने को तैयार है। वह नये पराक्रम की तैयारी में लगा है। उसे अवसर खोजना नहीं है बल्कि वह अवसर पैदा करने में लगा है।

युवा की स्थिति कमोबेश हरदम ऐसी नापने की कोशिश कुछ लोग करते ही रहे हैं जिससे उसे निकम्मा साबित किया जा सके मगर युवा ने कभी ऐसा मौका दिया नहीं है, वह सतत् तत्पर अपने रास्ते पर चल रहा है, खड़ा है, आगे बढ़ रहा है। समय आने पर युवा ने पहले भी अपनी शक्ति दिखाई है, आज भी वह अपनी शक्ति अवश्य दिखाएगा। हर आंदोलन, अभियान, संघर्ष, समूह में उतार-चढ़ाव तो आता ही है। आरोहण-अवरोहण तो एक प्रक्रिया है। लहरें निरन्तर चलती हैं मन्दी या तेजी तो आती-जाती रहती है।

युवा-युवा है। वह युवा था, आज है, आगे भी रहेगा। उसे दुनिया की कोई ताकत समाप्त नहीं कर सक़ती। उसके सपने चूर-चूर करना आसान काम नहीं है। जब तक विश्व है युवा अपनी सक्रियता, प्रासंगिकता बनाए रखेगा। युवा के समाप्त होने का अर्थ है समाज की ताकत का समापन। युवा मरेगा तो समाज मुर्दा बन जाएगा। युवा जागेगा, अवश्य जागेगा।

विकल्प नहीं संकल्प

युवा सक्रिय है यह हम मानते हैं, हमें मानना पड़ेगा। मगर यह भी सत्य है कि आज युवा को और अधिक सक्रिय, जागरूक, सावधान, सतर्क होने की जरूरत है। आज के युग में जब हिंसा, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, गरीबी, भेदभाव, मूल्यहीनता, शोषण, अत्याचार, उत्पीड़न बढ़ रहे हैं। हिंसा अपने पंजे फैला रही है। हिंसा का तांडव हर क्षेत्र में फैल रहा है। हिंसा के नये-नये तरीके सामने आ रहे हैं। हिंसा परिवर्तन, समाधान का माध्यम नजर आ रही है। हिंसा की सीमाएं बढ़ रही हैं और उसकी मर्यादा समाप्त हो रही है। हिंसा की मार सम्बन्धित व्यक्ति के बजाय गैर-सम्बन्धित, साधारण नागरिक, अनजान, निर्दोष पर पड़ रही है। वह तनाव, दबाव में जीने को मजबूर किया जा रहा है। हिंसा संगठित, समूह, शासन की ताकत के बजाय अन्य लोगों द्वारा भी अपनाई जा रही है। सेना, पुलिस, प्रशासन के अलावा अनेक समूह, संगठन, व्यक्ति इसे अपनाकर अपनी बात मनाने का एक जरिया बना रहे हैं। आतंकवादी, नक्सली, पृथकतावादी ताकतें भी हिंसा का प्रयोग अपना रही हैं। हिंसा के माध्यम से अपना लक्ष्य प्राप्त करना चाहते हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर से लेकर स्थानीय स्तर तक हिंसा का माहौल, बोलबाला बढ़ रहा है। हिंसा व्यक्तिगत समस्या नहीं रही है। विकास के साथ-साथ हिंसा का विकास भी हुआ है। हिंसा की शक्ति, शांति, रणनीति में भी व्यापक बदलाव आया है। हिंसा के साधनों, यंत्रों, अस्त्रों का भी विकास बहुत ऊंचे स्तर तक हुआ है। हिंसा के क्षेत्र में नये-नये कौशल प्राप्त किए गए हैं। हिंसा की मारक शक्ति का बड़ा विस्तार हुआ है। विनाश के दरवाजे तेजी से खोले गए हैं। हिंसा का क्षेत्र साधारण नहीं रहा है मात्र आमने-सामने लड़ने तक हिंसा सीमित नहीं रही है। अब हिंसा के क्षेत्र में ऐसे-ऐसे प्रबन्ध, इंतजाम, कौशल, साधन खोजे गए हैं जिनसे संपूर्ण विश्व को खतरा पैदा हो गया है। हिंसा व्यक्ति, परिवार, समूह, गांव, क्षेत्र, प्रान्त, देश तक

सीमित नहीं रही। अब हिंसा से मानव मात्र को ही नहीं, प्राणीमात्र को ही नहीं बल्कि पेड़, पौधे, वनस्पति, प्रकृति संसार को भी खतरा पैदा हो गया है। तरह-तरह के हथियार, बम तैयार कर हिंसा को भस्मासुर बनाकर खड़ा किया गया है।

आज हिंसा का भयंकर रूप सामने खड़ा है। हिंसा की चरम व्यापकता है। हिंसा भय, दबाव, तनाव, विनाश फैला रही है। मगर हिंसा की सीमा भी नजर आती है। हिंसा विनाश कर सकती है। हिंसा समाप्त कर सकती है। हिंसा तबाही फैला सकती है। इन सबके बावजूद मानव विचार, मानव मन को बदलने का काम हिंसा नहीं कर सकती। हिंसा से कोई मसला हल नहीं हो सकता। हिंसा मतभेद को बढ़ा सकती है, मिटा नहीं सकती। हिंसा प्रेम नहीं सिखा सकती। हिंसा से निर्माण के द्वार नहीं खोले जा सकते। हिंसा जोड़ने का काम नहीं कर सकती। हिंसा सुख, संतोष, आनन्द, समृद्धि नहीं ला सकती है।

हमें रचना, निर्माण, परिवर्तन, प्रेम, भाईचारा, जीवन, चाहिए तो हमें हिंसा से भिन्न रास्ता अपनाना ही होगा। हमें अहिंसा, शांति, प्रेम, विचार-विमर्श का मार्ग अपनाना होगा। सह-अस्तित्व के अवसर, रास्ते ढूंढने एवं अपनाने होंगे। अहिंसा, विचार-विमर्श की शक्ति को जागृत एवं उजागर करना होगा। विचार से ही व्यक्ति में बदलाव लाया जा सकता है। हृदय-परिवर्तन ही सच्चा परिवर्तन है। विचार परिवर्तन, विचार से ही समस्याओं का समाधान, मतभेद की दूरी कम करनी होगी। हमें विचार की शक्ति को बढ़ाने की जरूरत है। यह एक बड़ी चुनौती आज देश, विश्व के सामने है। व्यक्ति, परिवार, ग्राम से लेकर विश्व तक एक बड़ी चुनौती के रूप में आज यह बात सामने है। इसे समझकर युवा ही इसको स्वीकार करने की शक्ति रखता है। युवा से ही यह अपेक्षा है कि वह आगे बढ़कर इस चुनौती को स्वीकारे और हर स्तर पर यथाशक्ति कार्य प्रारंभ कर दे। वह अकेला है या समूह में इसकी चिन्ता न करे। जहां है वहीं से "एकला चलो रे" की धुन पर अपने कदम बढ़ाए। काम छोटा है या बड़ा इसकी हीनता या महत्ता से न डरे। छोटे-छोटे कामों से ही बड़े काम हुए हैं।

मीलों का सफर अपने आप पूरा नहीं होता उसके लिए सर्वप्रथम एक कदम बढ़ाना पड़ता है। कदम उठते ही रास्ता, सफर, लक्ष्य एक

कदम कम हो जाता है, समीप आ जाता है, दूरी कम हो जाती है। एक समय में एक कदम बहुत जरूरी एवं पर्याप्त है। हर कदम दूसरे कदम को आह्वान करता है, और चाल में निरन्तरता बनती है। दोनों पांव एक-दूसरे के पूरक हैं। मुकाबला नहीं करते बल्कि एक-दूसरे को सहयोग देते हैं, आगे बढ़ने में। आप भी जहां हैं वहां इस ओर एक कदम बढ़ाइये, उठाइये। अच्छा काम करने में झिझक क्यों ? हम किसी का इंतजार क्यों करें ? हम स्वयं नेतृत्व क्यों नहीं संभालें? अपनी शक्ति को पहचानें। अपनी तरुणाई को करवट लेने दे ? यह अवसर बार-बार नहीं आता हैं समय चूकने पर पश्चाताप न करना पड़े। अभी मौका है। इससे अच्छा सुअवसर कब मिलेगा ? आओ, आज से, अभी से हम संकल्प करें—व्यक्ति निर्माण, स्वनिर्माण का। अपने व्यक्तित्व विकास के लिए, अपने चहुंमुखी विकास के लिए प्रत्येक क्षेत्र में आपको आगे बढ़ना है। अपना लक्ष्य तय करके अभी से आपको जुट जाना है। सर्वांगीण विकास जरूरी है। समाज निर्माण से मानव निर्माण की यात्रा में आपका सहयोग बहुत महत्त्वपूर्ण, जरूरी है।

व्यक्ति का निर्माण, व्यक्ति का सुधार, अपने स्वयं में बदलाव सबसे महत्त्वपूर्ण एवं सार्थक कदम है। आज भी आप युवा हैं। पराक्रम आपकी पहचान है। चुनौती, साहस आपको अच्छा लगता है। अपना पराक्रम सर्वप्रथम अपने पर आजमाइये। अपने बदलाव का संकल्प विश्व बदलाव के रास्ते खोलेगा। मात्र विकल्प के पीछे न भागें, संकल्प करें। संकल्प की राह लक्ष्यभेद का अवसर प्रदान करेगी। संकल्प चाहे छोटे-छोटे हों मगर उनका प्रभाव गहरा है। संकल्प जीवन मूल्य, जीवन पद्धति बनाता है। जीवन पद्धति ही मूलभूत परिवर्तन को संभाल सकती है। जीवन पद्धति ही बदलाव, परिवर्तन, व्यवस्था को तय करती है इसलिए हमें अपनी जीवन पद्धति को जानना, समझना, अपनाना होगा। जीवन पद्धति तय करनी होगी। तदनुसार ही हमारा लक्ष्य तय होगा। साधन एवं साध्य का तालमेल बैठाना ही होगा। साध्य एवं साधन की शुद्धता, सम्बन्ध पर पूर्ण विचार आवश्यक है। इन्हें अलग करके नहीं देखा जा सकता है।

दुनिया में कोई भी हो उसे अपनी माँ प्रिय है, अतिप्रिय है। अपनी माँ को प्यार करना उसका परम कर्त्तव्य है। माँ कैसी भी हो, वह माँ

है। हर बेटे-बेटी के लिए वह माँ है। उससे कितनी भी सुन्दर, अच्छी, गुणवाली कोई स्त्री उसकी जन्म देने वाली माँ नहीं बन सकती है। जन्म देने वाली माँ का कोई विकल्प हो ही नहीं सकता। इसलिए माँ का संकल्प ही है। विश्व की समस्त महिलाओं को आप सम्मान, प्रतिष्ठा दें, देनी चाहिए। आप उसे माँ का सम्मान सूचक सम्बोधन दे सकते हैं। उसे अपनी माँ बनाने की शक्ति आप में नहीं है। वह पसन्दगी का सवाल नहीं है। इसी तरह अपने गुण, पराक्रम, शक्ति से ही आपको कार्य प्रारंभ करना है। अपने गुणों को बढ़ाना है। अपनी क्षमताओं के द्वार खोलने हैं। आत्मबोध जागृत करना है। अपने को जानना, देखना, समझना है। अपनी शक्तियों का अहसास, आभास करना है। अपनी ऊर्जा को सक्रिय कर उपयोगी कार्य में लगाना है।

याद रखो कि दुनिया के तुम एक महत्त्वपूर्ण भाग, हिस्से, अंग हो। तुम पर भी दुनिया की व्यवस्था की जिम्मेवारी है। दुनिया में अपनी एक बड़ी भागीदारी एवं भूमिका है। उसे निभाना ही है। अगर निभाने में चूक हुई तो कुछ रुकावट कहीं न कहीं अवश्य आएगी। एक तरफ हम अपने को दुनिया का महत्त्वपूर्ण अंग मानते हैं और दूसरी ओर अपने को उससे बाहर कर अलग कर दुनिया में परिवर्तन, दुनिया को सही चलने के सपने देखते हैं। जब किसी साधारण मशीन का भी कोई छोटा अंग, पुर्जा काम कर देना बंद कर देता है तो मशीन बंद हो जाती है। उसके संचालन, कार्य में रुकावट आती है। इस जटिल संसार में मानव जैसा महत्त्वपूर्ण अंग सक्रिय नहीं है तो दुनिया कैसे अच्छी चलेगी ? इसलिए प्रत्येक मानव उपयोगी एवं सार्थक है। विश्व-निर्माण, संचालन में उसका योगदान चाहिए। सुन्दर, अच्छा, सक्रिय संसार बनाना है, बनना है तो हम सबकी भागीदारी कितनी जरूरी है ? सबकी भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए हमें स्वयं की, व्यक्ति की भागीदारी सुनिश्चित करना जरूरी है। "एक के साधे सब सधे"।

अपने जीवन में, अपने स्वयं से ही बदलाव या पराक्रम शुरू करना है। अपने से परिवार में, मित्रमण्डल में, मोहल्ले में, गांव में, कस्बे में, शहर में, क्षेत्र में, प्रदेश में, देश में, संसार में फैल जाना होगा। "विश्व स्तर पर सोच और स्थानीय स्तर पर कार्य", "यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे" यह वाक्य हमें (प्रेरणा) इशारा कर रहे हैं। आपको तो अपने से प्रारंभ करना है। हम विशाल, व्यापक विश्व परिवार के सदस्य हैं।

जंगल में अनेक और तरह-तरह के जानवर बड़ी संख्या में रहते हैं। उनमें सिंह का अपना ही स्थान है। सिंह की संख्या भी अपनी ही होती है। आप अपने को किस श्रेणी में रखना चाहते हैं। निर्णय आपका अपना है।

संसार, राष्ट्र, समाज, को आपकी आवश्यकता है। मानवता आपका आह्वान कर रही है। आपका आस-पड़ोस आपको बुला रहा है, निमंत्रण दे रहा है। आपसे उम्मीद लगाए, अपेक्षा कर रहा है। अपना वातावरण आपसे जुड़ना चाहता है। आपका कमजोर साथी आपके सहयोग के लिए उतावला है। जरूरतमंद को आपकी ऊर्जा, शक्ति, सहकार, सहयोग साथ चाहिए। सूरते हाल बदलने में आपकी ताकत लगे तभी नया युग आयेगा। श्री दुष्यंत की पंक्तियां कुछ कह रही हैं—

"हो गई है पीर पर्वत-सी पिघलनी चाहिए,
इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए।
आज यह दीवार, पर्दों की तरह हिलने लगी,
शर्त लेकिन थी कि ये बुनियाद हिलनी चाहिए।
हर सड़क पर, हर गली में, हर नगर, हर गांव में,
हाथ लहराते हुए हर लाश चलनी चाहिए।
सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं,
मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए।
मेरे सीने में नहीं तो तेरे सीने में सही,
हो कहीं भी आग, लेकिन आग जलनी चाहिए।"

ग्रामीण युवा शहरी युवा : छात्र-गैर छात्र युवा

युवा आन्दोलन, युवा कार्यक्रम, युवा की जब बात चलती है तो उसमें सभी युवाओं पर ध्यान नहीं दिया जाता। युवाओं के विभिन्न रूपों की ओर ध्यान नहीं दिया जाता। सरकारी योजना हो, गैर सरकारी योजना हो, समाज का चिन्तन हो अधिकतर जब युवा के बारे में लोग सोचते हैं तो उनके समक्ष चित्र होता है, छात्रों का। छात्र समुदाय को ही मात्र युवा के रूप में देखते हैं। जो छात्र-छात्रा पढ़ते हैं स्कूल, कॉलेज जाते हैं तो उनको ही युवा मानकर, मात्र उनके लिए ही योजना, संगठन, संपर्क का विचार होता है। छात्र समुदाय में काम करने को युवा कार्य मानते हैं, यह ठीक है मगर जितना यह सत्य है उतना यह भी सत्य है कि हिन्दुस्तान में छात्र समुदाय के बाहर भी बड़ी संख्या में युवा वर्ग है जो छात्र नहीं है मगर उसकी संख्या अच्छी खासी है। उस युवा की ओर ध्यान देने की आवश्यकता महसूस ही नहीं की जा रही है।

छात्र समुदाय में भी एक बड़ा तबका है जो युवा के चित्र पर आने से रुक जाता है उसे भी नजर अन्दाज होना पड़ता है। वह है ग्रामीण छात्र समुदाय। गांव में रहने वाले युवाओं की संख्या पर्याप्त है मगर उसे मान्यता ही नहीं मिल पाती। उसकी ओर किसी का ध्यान भी कम ही जा पाता है। ग्राम स्तर पर रहने वाला युवा, शहर के युवा के सामने पूरी तरह नजरअंदाज होता है, किया जाता है। कोई भी उसके बारे में चिन्तन, मनन नहीं करता। थोड़ा बहुत कोई करे, कोई योजना, संगठन कार्य होता भी है तो वह उनके पास तक पहुंच नहीं पाता। थोड़ा उस ओर चलता भी है तो रास्ते में अनेक स्थान ऐसे हैं जिनमें वह योजना, कार्य उलझ जाता है और सही रूप में आम युवा तक नहीं पहुंच पाता है। कम-से-कम अशिक्षित, सामान्य युवा तक तो कार्यक्रम की पहुंच है ही नहीं। उनके नाम से जो योजनाएं बनाई भी जाती हैं तो उन पर शिक्षित या दूसरे ही लोग कब्जा,

अधिकार जमा लेते हैं। उन तक तो पहुंच हो ही नहीं पाती। ग्रामीण युवा पूरी तरह अलग-थलग रह जाता है।

शहरी युवाओं के लिए कुछ योजनाएं, कार्यक्रम हैं वे कुछ लोगों तक पहुंच पाते हैं। यह बात तो शहरी युवाओं के बारे में भी ठीक बैठती है कि उनके लिए भी पर्याप्त मात्रा में कार्यक्रम नहीं है। साधनों की कमी, प्राथमिकताओं को तय करने की चूक, युवा पीढ़ी के प्रति अलगाव एवं निराशा, युवाओं की भागीदारी बढ़ाने में अरुचि, युवानीति का अभाव, युवा शक्ति का दुरुपयोग करना, उल्लू सीधा करने की चाल आदि अनेक ऐसी बातें हैं जो युवाओं के लिए कोई योजना या कार्यक्रम किसी भी स्तर पर व्यापक तौर पर हम नहीं बना पाये। शहरी युवाओं को भी हम पूरे कार्यक्रम नहीं दे पाये। युवा को राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया की ओर नहीं मोड़ पाये। शहरी युवा में भी कुछ सुविधाएं, कार्यक्रम छात्र समुदाय के आसपास ही घूमते रहते हैं। उन्हीं को सामने रखकर राष्ट्रीय सेवा योजना (एन.एस.एस.), एन. सी.सी. आदि की कुछ योजनाएं बनी भी उनमें भी नाम पूर्ति, खानापूर्ति के काम ही ज्यादा हुए। व्यापक तौर पर युवाओं को भी इन योजनाओं ने आकर्षित नहीं किया। कुछ ही युवा उत्साह से इस ओर मुड़े अन्यथा अधिकतर तो मजबूरी में नाम लिखवाते हैं क्योंकि किसी न किसी में आवश्यक रूप में भाग लेना ही होता है। केवल नियम का पालन जरूरी है इसलिए इनके सदस्य बनते हैं। भावना, निष्ठा, सेवा, त्याग, भागीदारी, पराक्रम, प्रशिक्षण, नया सीखने की चाह आदि के कारण नहीं।

शहर में भी जो युवा काम करते हैं, अशिक्षित हैं उनके लिए कोई योजना या कार्यक्रम नहीं है। इस प्रकार शहर के युवाओं का भी एक बड़ा हिस्सा इस प्रकार अलग-थलग रह जाता है। अब अगर हम शहरी युवा की तुलना ग्रामीण युवा से करें तो कह सकते हैं कि शहरी युवा को कार्यक्रम की झलक कहीं दिखाई जाती है। मगर ग्रामीण युवा दूर ही रह जाता है। फिर शिक्षित युवा और गैर-शिक्षित युवा या कार्य करने वाला युवा की बात सोचें तो इनमें से शिक्षित युवा कुछ जुड़ पाता है। छात्र युवा और गैर छात्र युवा में से छात्र युवा को कुछ हिस्सा मिल पाता है उसमें वह किसी न किसी प्रकार थोड़ी बहुत भागीदारी अवश्य ले पाता है। तुलनात्मक दृष्टि से देखने पर आप कह सकते हैं कि उसके मुकाबले दूसरे को कुछ मिला है, कुछ

ज्यादा या कम मिलता है। जब हम युवाओं के बारे में, कुल युवाओं के बारे में, युवाओं को पर्याप्त कार्यक्रम, योजना, भागीदारी, संपर्क, संगठन आदि मिल पाता है या नहीं इस पर सोचते हैं तो पाते हैं कि देश में युवाओं के प्रति कभी गम्भीरता से विचार किया ही नहीं गया, ऐसा लगता है। उनको राष्ट्र निर्माता, भावी कर्णधार के रूप में देखने, तैयार करने की योजना पर ध्यान नहीं दिया गया।

युवाओं की क्या जरूरतें हैं? युवाओं को किस ओर मोड़ना चाहिए? उनको क्या सुविधाएं, साधन उपलब्ध कराने चाहिए? उनको दिशा देने के लिए क्या करना चाहिए? उनमें मूल्यबोध, राष्ट्रप्रेम भरने के लिए क्या किया जाए? उन्हें साहस, पराक्रम के अवसर कैसे प्रदान किए जाएं? युवा के लिए समाज, राष्ट्र की क्या जिम्मेवारी है? क्या युवाओं की समस्यायें हैं? उनके लिए कुछ करने की आवश्यकता है क्या? युवाओं को जागृत करने की कोई जरूरत है क्या?

इस तरह के अनेक सवाल अनसुलझे हमारे सामने हैं। इन सबके जवाब हमें ढूंढने एवं देने होंगे। यह सवाल तो हमारी राष्ट्रीय कमजोरी, चूक, भूल को उजागर करते हैं। हमारी निष्ठा, भावना पर संदेह की उंगली उठाते हैं। इससे भी ज्यादा दुखदायी तो यह है कि विलोम, विपरीत, प्रतिकूल परिस्थिति में भी जब कुछ युवा अपने उत्साह, पराक्रम, निष्ठा, धैर्य, साहस, बहादुरी, सेवा, साधना, तप से आगे बढ़ भी जाते हैं तो सहायता, सहकार, सहयोग, मान्यता, नैतिक प्रोत्साहन तो दूर, वाहवाही के दो बोल भी नहीं मिल पाते तब उनकी मनोदशा क्या होती है? उनकी व्यथा का अहसास करने की सोच भी नहीं बन पाती।

आदर्श और आचरण

युवाओं के आदर्श के बारे में सभी मानते हैं कि उनके शरीर के साथ-साथ उनके आदर्श भी जवान होते हैं, ऊँचे होते हैं, महान होते हैं। वे आदर्श में ही जीते हैं। वे आदर्श लोक के सपने में ही खोये रहते हैं। आदर्श के अलावा उन्हें कुछ दिखता नहीं है। उनके चारों ओर आदर्श का घेरा रहता है। कुछ लोग तो यहां तक आरोप लगाते हैं कि युवा मात्र आदर्श में रहकर अपना नुकसान करता है। अपने को खत्म करता है। आदर्श से वह बाहर निकल ही नहीं पाता है। आदर्श उस पर हावी रहता है। वह आदर्श के बोझ तले दबा रहता है। इन सबको मानते हुए, जानते हुए भी सच्चाई दोनों ही स्थितियों में है। दोनों पूरी तरह गलत या ठीक नहीं हैं। हम कह सकते हैं कि युवा आदर्श प्रेमी अवश्य है।

युवा का आदर्श यथार्थ कैसे बने? आदर्श व्यवहार में कैसे आए? आदर्श का सपना साकार स्वरूप कैसे ले? आदर्श किसी भी व्यक्ति को अपना लक्ष्य, ऊँचा लक्ष्य, प्राप्त करने का उत्साह प्रदान करता है। उसकी कल्पना शक्ति को बढ़ाता है। उसे और आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। आदर्श एक प्रेरक शक्ति है। आदर्श जिज्ञासा बढ़ाता है। आदर्श प्रकाश स्तम्भ का कार्य करता है। आदर्श अपनी ओर आकर्षित करता है। आदर्श में अपनी ओर खींचने की ताकत है। आदर्श की समझ आने पर, आदर्श को जब हम हजम करते हैं तब आदर्श हमारे समीप होने लगता है अर्थात् जब हम आदर्शमय होने की तैयारी करते हैं, अपने को आदर्श के साथ पूरी तरह जोड़ते हैं। उसको प्राप्त करने के दृढ़संकल्प करते हैं, दृढ़संकल्प में लग जाते हैं तो आदर्श हमारी ओर बढ़ने लगता है। उसकी दूरी कम होने लगती है। हम अपने को आदर्श के अनुकूल ढालने लगते हैं, उसके लिए प्रयास करते हैं तो हमारे कदम आचरण की ओर बढ़ने लगते हैं। आदर्श की सार्थकता तभी है जब वह आचरण में आ जाए। आदर्श जब आचरण में आ जाता है तो वह व्यवहार बन जाता है। आदर्श की प्राप्ति आचरण के द्वारा ही होती है। हम जब आदर्श का जीवन जीते हैं और जीने लगते हैं, वह हमारा स्वभाव, प्रकृति बन जाता है।

उसका हमारा अटूट सम्बन्ध हो जाता है और आगे का आदर्श फिर हमारे सामने खड़ा रहता है। इस प्रकार आदर्श और आचरण की एक निरन्तर दौड़ चलती रहती है। यह दौड़ जीवन के विकास के लिए आवश्यक है। यह दौड़ जीवन के विकास क्रम के लिए आवश्यक है। यह दौड़ जितनी सार्थक होगी उतना ही समाज आगे बढ़ेगा।

आदर्श के बिना आचरण और आचरण के बिना आदर्श पंगु नजर आता है। वह स्थिर हो जाता है। उसकी गति रुक जाती है। उसमें ठहराव आ जाता है। वह यंत्र बनने लगता है। इसलिए आचरण को गतिमान रखने के लिए आदर्श की सीढ़ी की जरूरत है। आदर्श कोरा आदर्श ही न रह जाए इसके आचरण के कदम की जरूरत, सहायता महसूस होती है। जिस समाज में आदर्श और आचरण का सीढ़ी और कदम का सम्बन्ध है वह सदैव गतिमान रहता है। उसमें निरन्तरता बनी रहती है। वह आगे बढ़ता रहता है। युवाओं के लिए आदर्श और आचरण के द्वैपद (दो कदम) महत्त्वपूर्ण हैं। जिस प्रकार एक कदम आगे बढ़ता है तो दूसरा कदम अपने आप उससे आगे जाने की तैयारी करता है। वे प्रतियोगिता में नहीं बल्कि पूरकता में विश्वास कर, एक-दूसरे को गति प्रदान करते हैं उसी तरह युवा के लिए आदर्श एवं आचरण की स्थिति है। आचरण आगे बढ़ता है तो आदर्श भी आगे बढ़ता है-पांवों की तरह। दोनों एक-दूसरे के पूरक बनकर युवा मन को भविष्य के झूले में आगे बढ़ाते हैं। आदर्श और आचरण में दृष्टि और कदम छिपे हैं। दृष्टि चिंतन, मनन, कल्पना को बढ़ाती है। कदम सक्रियता, भागीदारी, एक होने की शक्ति पैदा करते हैं। आदर्श और आचरण दोनों मिलकर पूरे बनते हैं। आदर्श के पास दृष्टि है गति नहीं, आचरण के पास गति है दृष्टि नहीं। युवा जब अपने संकल्प, विश्वास, निश्चय के साथ इस दृष्टि और गति को जोड़ता है तो आदर्श और आचरण का मेल विकास के द्वार खोलता है।

जीवन की तराजू के आदर्श एवं आचरण दो पलड़े हैं। इनका जितना संतुलन, समन्वय होगा उतना ही जीवन गतिमान होगा। जीवन की धारा में लहरें बढ़ेंगी। जीवन संगीतमय होगा। जीवन की सार्थकता बनेगी। युवा पराक्रमी, उद्यमी, गतिशील बनेगा। समाज, राष्ट्र उन्नति करेगा। नवनिर्माण, नवरचना के द्वार खुलेंगे। नये सर्जन की ओर कदम उठेंगे। राष्ट्र जागृत होगा। आदर्श और आचरण का संतुलन होगा तो आदर्शोन्मुख यथार्थवाद आएगा। दृष्टि और कदम का मेल नई राहें खोलेगा। नये विचारों का उद्भव होगा। युवा सक्रिय होकर आगे बढ़ेंगे, चेतना जगेगी।

युवानीति का अभाव

आजादी के पचास वर्ष बाद भी हमारी अपनी कोई राष्ट्रीय युवानीति की विधिवत सार्थक घोषणा नहीं हो पाई है। आजादी के वर्षों बाद तक तो इस ओर विचार भी नहीं हुआ। पिछले कुछ वर्षों से थोड़ी बहुत चर्चा, बातचीत, हलचल इधर-उधर उठती है। कभी-कभी सरकारी, गैर-सरकारी, युवा संगठन आदि कोई बैठक आदि करके इस सम्बन्ध में थोड़ी बहुत चर्चा कर रहे हैं। अभी कुछ लोग इस ओर सोचने, समझने लगे हैं। कुछ कार्यक्रम भी बनाने की ओर कदम बढ़ा रहे हैं। चाहे ये छोटे ही कदम हैं मगर इनकी उपयोगिता है। इनका महत्त्व है। युवा शक्ति को सक्रिय, जागृत करने के लिए हमारे पास कोई व्यवस्था नहीं है। हमने अभी तक कोई योजना, नीति नहीं बनाई। युवानीति का अभाव आज अनेक लोगों को खटकने लगा है। युवाओं के प्रति इतनी लापरवाही क्या बताती है? राष्ट्र में अनेक नीतियां बनी हैं, बनाई जा रही हैं। राष्ट्रीय युवा नीति पर व्यापक तौर पर गहराई से विचार-विमर्श होना चाहिए। शहर-शहर, गांव-गांव में युवानीति पर गोष्ठी, चर्चा, संवाद होना चाहिए। देशभर से सुझाव आने चाहिए। देशभर के युवाओं की भागीदारी से ही राष्ट्रीय युवानीति तैयार करने के प्रयास होने चाहिए। अब जब विलम्ब हो ही गया है तो अब ऊपर से कोई नीति थोपी नहीं जानी चाहिए बल्कि प्रत्येक युवा की भावना को जानने, समझने के लिए उसकी भागीदारी सुनिश्चित करके उसे संवाद में शामिल करना चाहिए। अगर इस प्रकार युवा की भागीदारी सुनिश्चित करके हम किसी नीति की घोषणा कर पायेंगे तो वह नीति युवाओं के सक्रिय सहयोग से आगे बढ़ेगी। यह बहुत बड़ा काम होगा कि प्रत्येक युवा अपने, देश के बारे में सोचने, समझने, योजना बनाने में अपनी भूमिका, महत्त्व का अहसास कर पायेगा। इसमें वह रुचि लेगा। वह कह सकेगा कि यह हमारी नीति है। इसमें अपनापन देखेगा। यह सचमुच राष्ट्रीय युवा नीति होगी। सर्वसहमति और सर्वानुमति के आधार पर लोकतंत्र की सही नींव पड़ेगी।

युवा नीति में सबकी भागीदारी होगी तो गांव-गांव में यह बात पहुंचेगी। यह मात्र शहरों, कस्बों, शिक्षितों, अमीरों तक सीमित नहीं रहेगी। यह मात्र पुस्तकों, नियमों, नीतियों तक ही नहीं रह पाएगी। इसका विस्तार, पहुंच युवा मन तक होगी। तब सचमुच युवा कह सकेगा कि हमारी राष्ट्रीय युवा नीति है। हम गौरव से कह सकेंगे कि हमारे युवाओं ने राष्ट्रीय युवा नीति बनाई है। इसमें समय लगे तब भी इस ओर कदम बढ़ाना चाहिए। यह युवा जागृति का क्रांतिकारी कदम होगा। युवा शिक्षण, प्रशिक्षण, भागीदारी का यह एक अनूठा कार्यक्रम भी बनेगा। युवाओं में इससे एक लहर उठेगी। युवा अपनी पहचान, अस्मिता को समझेगा। उसे आत्मबोध होगा। वह एक जागरूक नागरिक के कर्त्तव्य को समझेगा।

युवा नीति

युवा नीति में क्या-क्या हो ? युवा नीति कैसी होगी ? इन सबके बारे में व्यापक बहस चलनी चाहिए। साथ ही मैं इस बात को मानता हूँ, बार-बार दोहराना चाहता हूं कि युवाओं की व्यापक भागीदारी से ही युवा नीति बननी चाहिए। युवा नीति में युवा की परिभाषा, युवा की पहचान, युवा शक्ति की भूमिका, युवा की दिशा, लक्ष्य, कर्त्तव्य, अधिकार, क्षेत्र, साधन, कार्यक्रम, युवा के सर्वांगीण विकास की राह, सोच स्पष्ट झलकनी चाहिए। युवा नीति युवाओं के लिए प्रकाश स्तम्भ बने, उत्साह का स्रोत बने, जागृति का केन्द्र बने। युवा नीति में युवाओं से संबंधित सभी पहलुओं का समावेश होना अति आवश्यक है। जन्म से लेकर जीने तक की बातें उसमें हों। युवा के व्यक्तिगत, सामाजिक, आध्यात्मिक, नैतिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक, आर्थिक, राजनैतिक, कौशल, मानसिक, बौद्धिक, पारिवारिक, शारीरिक, विकास की स्पष्ट झलक एवम् संभावना युवा नीति में आनी चाहिए। युवा नीति के बाद युवा अपने गौरव का अनुभव करे। उसे गरिमा महसूस हो। वह प्रतिष्ठा के साथ आगे बढ़ने की चाह उससे प्राप्त करे। युवा नीति एकता, सद्भाव, सौहार्द, अपनापन, स्वावलम्बन, सादगी, स्वदेशी, संवेदना की भावना को युवाओं में भरें। तप-त्याग, साधना, सेवा, परमार्थ के साथ युवा अपना विकास भी उसमें से देख सके, कर सके। युवा को अपनी क्षमता, शक्ति, इच्छा के अनुसार आगे बढ़ने के अवसर उसमें से प्राप्त हो। एक ओर युवा कर्त्तव्य की व्याख्या, बात युवा नीति में जोरदार ढंग से हो तो दूसरी ओर वह अधिकारों से भरपूर भी हो। युवा नीति में हर युवा का स्थान सुनिश्चित हो। एक भी युवा उससे बाहर या अलग नहीं महसूस करे। हर एक के लिए युवा नीति के द्वार खुले रहेंगे। युवा नीति से युवा मात्र लेंगे ही नहीं बल्कि युवा नीति को वे निरन्तर देंगे भी, उसे सशक्त बनायेंगे।

युवा नीति देश के समस्त युवाओं का प्रतिनिधित्व करेगी, उनकी भावना व्यक्त करेगी। चाहे युवा शिक्षित हो, गैर शिक्षित हो, शहरी

हो या ग्रामीण, अमीर हो या गरीब, छोटा हो या बड़ा, सक्रिय हो या निष्क्रिय सब युवाओं के लिए युवा नीति बने, उन तक पहुंचे, उन्हें प्रभावित करे। उनकी भागीदारी करवाए। उन्हें अपने माध्यम से जोड़े। युवा दूर भी जाना चाहे तो युवा नीति ऐसी हो जो उसे अपने साथ जोड़े रखे। ऐसी राष्ट्रीय युवा नीति को हम बना पायें तो राष्ट्र का भविष्य तो उज्ज्वल होगा ही, विश्व को भी हम एक नई दिशा दे सकेंगे।

युवा नीति में युवाओं के मौलिक कर्त्तव्य, अधिकार स्पष्ट हों। युवा नीति में जीवन का अधिकार, काम का अधिकार शामिल हो। कुछ लोग युवा नीति में बेरोजगारी भत्ते की बात रखना चाहते हैं। बेरोजगारी भत्ता यानी बिना काम किए पाने की ललक, इच्छा। बेरोजगारी भत्ते में मुझे भीख की भावना नजर आती है। अपने लिए युवा भीख मांगे, भिखारी बने यह दुर्भाग्यपूर्ण है। हमें युवा नीति में बेरोजगारी भत्ते की माँग नहीं रखनी चाहिए। इसी प्रकार की अन्य मांगें भी युवा नीति में न हों। हमें भत्ता नहीं, काम चाहिए। काम का अधिकार युवा नीति में हो। प्रत्येक युवा के लिए काम की सुनिश्चितता हम कर सकें तभी हमारी योजना सफल मानी जाएगी। बिना काम किए भत्ता नहीं चाहिए। हम निकम्मे नहीं बनना चाहते। काम हमारा कर्त्तव्य है। काम करना जीवन का आधारभूत लक्षण है। इसलिए बिना काम की कल्पना ही मृत्यु के समान है। मेरा तो मानना है कि काम को पैसे से भी नहीं जोड़ना चाहिए। क्षमतानुसार काम तथा आवश्यकतानुसार पैसा। पैसा काम के बीच आड़े न आये इस ओर हमें बढ़ना चाहिए। काम के बगैर हम रहेंगे नहीं, रह नहीं सकते, वह उचित नहीं है। हमारी धारणा इस सम्बन्ध में बदलनी चाहिए। हम समाजोपयोगी कार्य अपनी क्षमतानुसार अवश्य करेंगे। यह सोच बनने पर कितनी बड़ी रचना या निर्माण का काम होगा इसकी कल्पना करके देखें।

युवा नीति में चुनौती, पराक्रम, साहस के अवसरों को विशेष स्थान देना चाहिए। युवाओं को मान्यता देने की हिम्मत हमें दिखानी होगी। युवा नीति ऐसी हो जो चुनौती पराक्रम के अवसर युवाओं को प्रदान करे। युवा राष्ट्र के महत्त्वपूर्ण मुद्दों में अपनी अहम भूमिका निभा सके। समस्याओं के निदान के लिए युवा दूसरों की ओर न देखे। दूसरों पर आश्रित न हो। स्वयं निर्णय करके वे

समस्या के समाधान के लिए आगे बढ़ें। आज पर्यावरण, प्रदूषण, जंगल, जमीन, जल, संसाधनों के मुद्दे सामने हैं। उनमें युवा अपनी राय, विचार, सहयोग प्रदान करे। उनकी बात को सुना जाए। छोटे स्तर से बड़े स्तर तक सक्रियता बढ़े।

जमीन के बंटवारे का सवाल, प्रदूषण के खिलाफ जागृति एवं प्रदूषण रोकथाम के कदम, संसाधनों के स्वामित्व का प्रश्न, शिक्षा पद्धति में बदलाव की जरूरत, व्यवस्था परिवर्तन के मुद्दे पर सोच, गरीबी, बीमारी, बेरोजगारी के खिलाफ खड़े होने की ताकत, स्वास्थ्य, शिक्षा, निवास, भोजन आदि की व्यवस्था में सहयोग करने का वादा युवा नीति प्रदान करे। युवा नीति मात्र घोषणा के लिए न हो। उससे असर पड़ना चाहिए। नीति युवाओं को झकझोरे, तब युवा नीति की सार्थकता होगी।

युवा नीति अनावश्यक रूप से युवाओं को बांधे नहीं। उन्हें मुक्त, स्पष्ट चिन्तन का हक प्रदान करे, अवसर प्रदान करे। अपने विचारों को निर्भीक होकर युवा रख सके। युवा नीति सरकारी दबाव या मजबूरी न बने। इस सम्बन्ध में वर्तमान ढांचे में परिवर्तन लाकर ही युवा नीति को सशक्त एवं जुझारू बना सकते हैं। युवा नीति किसी दल, वर्ग, समूह से प्रभावित न हो। वह राष्ट्रीय युवा नीति ही हो। दल, वर्ग, समूह से ऊपर उठकर राष्ट्र के प्रत्येक युवा का प्रतिनिधित्व उसमें हो। निहित स्वार्थ के लिए युवा नीति का प्रयोग न हो। यह कठिन कार्य है मगर असंभव नहीं। दिखने में इसे अव्यावहारिक कह सकते हैं। कोई भी चीज तब तक अव्यावहारिक है जब तक वह बनती नहीं है, होती नहीं है। कल्पनाशील युवा तो सपने देखते हैं और उन्हें साकार करने में लग जाते हैं। युवा नीति युवाओं की कल्पना, सपनों को साकार करने में मददगार बने। नये आविष्कार, नई खोज, नये प्रयोग करने वाले प्रारंभ में अव्यावहारिक भी लगते हैं मगर दुनिया में उन्होंने नये-नये साधन, आविष्कार किए हैं जिन्हें बाद में मान्यता भी प्राप्त हुई। युवा नीति में नये प्रयोगों, खोजों, आविष्कारों के लिए विशेष स्थान रहना चाहिए। प्रयोग करने की छूट युवाओं के पास रहे।

युवा नीति में हुनर, कौशल, कारीगरी के लिए पूरी व्यवस्था होनी चाहिए। व्यावसायिक प्रशिक्षण के लिए प्रभावशाली व्यवस्था का प्रबन्ध रखा जाए। पारम्परिक हुनर, कौशल को बढ़ावा, प्रोत्साहन

देने के लिए युवा नीति सामने आए। युवा नीति युवकों को इस ओर आकर्षित करने में मदद करे। युवा नीति से युवा प्रोत्साहित होकर नये-नये हुनर सीखें। इससे युवाओं के सर्वांगीण विकास में मदद मिलेगी। स्वावलंबी, विश्वासी युवा आगे आयेंगे। विकेन्द्रीयकरण का रास्ता खुलेगा। रोजगार के ज्यादा अवसर प्राप्त होंगे। युवा नीति इन हुनरों में बड़े उद्योगों के हस्तक्षेप की रोकथाम करे। युवाओं द्वारा निर्मित सामग्री का उपयोग आवश्यक रूप से किया जाए। सरकारी खरीद में इस सम्बन्ध में विशेष ध्यान दिया जाए। जो सामग्री युवा बनाएंगे, गृह उद्योग, ग्रामोद्योग, कुटीर उद्योग, छोटे उद्योग में बनती है और उसकी खपत सरकार करती है या उसके काम में आती है तो उस सामग्री का प्रयोग आवश्यक रूप से किया जाए। इसके अलावा अन्य स्थान से वह सामग्री न ली जाए। इस क्षेत्र में अन्य उद्योग का प्रतियोगी हस्तक्षेप न हो। कला-कौशल बढ़ाने के लिए अलग से भी प्रयास किए जाएं।

युवा नीति मूल्यों पर आधारित हो। युवा नीति जीवननिष्ठ युवाओं को प्रोत्साहन देने वाली हो। युवा नीति भारतीय, राष्ट्रीय जीवन पद्धति को फैलाने का माध्यम बने। हम नकलची न बनें। हम अपनी जीवन पद्धति को गौरव, सम्मान, प्रतिष्ठा, संकल्प से अपनायें।

अपनी जीवन पद्धति अपनाने में हीनभावना क्यों ? हमारी जीवन पद्धति जो सादगी, स्वावलम्बन, परस्परावलंबन पर आधारित है। जो सहअस्तित्व पर टिकी है। जो वातावरण, आस-पड़ोस, प्रकृति के अनुकूल एवं मैत्रीपूर्ण है। आज की अनेक समस्याओं का कारण आज की जीवन पद्धति है। हमारी जीवन पद्धति में अनेक समस्याओं के समाधान छिपे हैं। हमारी जीवन पद्धति प्रकृति के समीप, प्रकृति पर आधारित है। इसे अपनाकर हम अनेक नुकसानों से स्वयं भी बचते हैं तथा औरों को भी बचाते हैं। हमारी जीवन पद्धति एक लम्बे अनुभव की देन है। हम मात्र उपभोग एवं उपभोक्ता संस्कृति को मानने वाली पद्धति पर चलने वाले नहीं हैं। हमारी जीवन पद्धति संतुलन, सहअस्तित्व, सहकार, मैत्री पर खड़ी है। हम शोषण, केवल अपने लिए जीने वाले, मेरे लिए ही विश्व बना है इस सोच के मानने वाले लोग नहीं हैं। हम एक-दूसरे के लिए हैं। मैं सबके लिए, सब मेरे लिए।

इस पद्धति में व्यक्ति अपने अनुशासन, आत्मानुशासन, स्वानुशासन को मानने वाला; समाज सम्पत्तिवान, सन्मतिवान, समृद्धिशाली; देश सशक्त, मजबूत दुनिया के साथ दोस्ती, सहअस्तित्व का नाता, प्रकृति से संतुलन, सहकार, अपनेपन की चाहत वाला है। इसे अपनाकर हम आज की समस्याओं से बच सकते हैं। युवा नीति हमें इसमें मदद करेगी। युवा नीति युवाओं में सामाजिक न्याय, आर्थिक सुदृढ़ता, राजनैतिक सूझ-बूझ, सांस्कृतिक मजबूती, समानता, आध्यात्मिकता, सहजता लाएगी। युवा नीति सम्प्रदाय, मज़हब, वंश, भाषा, प्रदेश, लिंग, रंग, क्षेत्र, वर्ग, वर्ण, वेश-भूषा आदि किसी भी प्रकार के भेद को नहीं मानेगी, उससे ऊपर रहेगी। युवा नीति मानव एकता की भावना ही नहीं रखेगी बल्कि प्रकृति, जीव-जन्तुओं के संतुलन को भी ध्यान में रखेगी।

युवा नीति युवा में श्रम की प्रतिष्ठा स्थापित करेगी। श्रम संस्कार का विचार युवाओं में संचारित करने में सहायक बनेगी। युवा किसी भी श्रम कार्य को छोटा नहीं मानेंगे। श्रम की पूरी निष्ठा, श्रमिक के प्रति पूरा लगाव, श्रम के प्रति सम्मान। श्रम को पूजा के रूप में देखना, करना, श्रम करने का स्वभाव सभी युवाओं में आए। प्रत्येक युवा श्रम में अवश्य भाग ले। श्रम ही जीवन है। वह भी उत्पादक श्रम। श्रम से स्वास्थ्य, मन भी अच्छा होता है। युवाओं के लिए श्रम परम जरूरी तत्त्व है।

युवा नीति स्पष्ट रूप से युवा जीवन को प्रभावित करेगी। वह राजनैतिक जीवन में शुचिता, स्पष्टता, निर्भयता; आर्थिक जीवन में समता, समानता, मानवता, संकल्पता, शुद्धता; सामाजिक जीवन में प्रेम, सौहार्द, सद्भावना, भाईचारा, सेवा; सांस्कृतिक जीवन में दृढ़ता, अध्ययनशीलता, संवाद, संवेदना; आध्यात्मिक जीवन में सहजता, सरलता व आनन्द लाएगी। युवा नीति युवाओं के लिए उपयोगी, ज्ञानवर्द्धक, समाजोपयोगी, श्रमप्रधान शिक्षा की व्यवस्था बनाएगी। आज की पंगु शिक्षा पद्धति से युवाओं को बचाएगी। युवा नीति युवाओं में स्वार्थ, भाई-भतीजावाद, बेकारी, अवमूल्यन, लालफीताशाही, भ्रष्टाचार, अन्याय, शोषण, अत्याचार, आतंकवाद, हिंसा, निराशा, भटकाव, घुटन, नशा, निष्क्रियता, मौकापरस्ती, भोगवाद, असहयोग, गलत प्रतियोगिता, अन्धी नकल, दलीय, जातीय, क्षेत्रीय संकीर्णताएं या किसी भी तरह की संकीर्णता,

यौनाचार, हर तरह की टूटन को रोकेगी। नया मानव बनने में मदद देगी।

युवा नीति राष्ट्र का मेरुदंड है। किसी भी राष्ट्र की शक्ति, ताकत युवाओं में निहित होती है। युवाओं की ताकत पर ही राष्ट्र का निर्माण होता है। इसलिए अगर राष्ट्र को मजबूत बनाना है तो राष्ट्र के युवाओं को मजबूत, शक्तिशाली, चिन्तनशील, प्रभावी बनाना ही होगा। युवाओं को सक्रिय, प्रभावशाली बनाने में युवा नीति का महत्त्वपूर्ण स्थान हो सकता है। उपरोक्त वर्णित युवा नीति को लागू किया जाए, उस पर अमल किया जाए तो राष्ट्र का भविष्य उज्ज्वल होगा। ऐसी ही युवा नीति की हमें जरूरत है। थोथी, दिखावा मात्र, खानापूर्ति के लिए कोई नीति बनाई जाती है तो उसका प्रभाव क्या होगा? यह हम सब जानते ही हैं। अब राष्ट्र इसमें लापरवाही नहीं बरतेगा। अब सतर्क होकर आगे कदम बढ़ाने की तैयारी राष्ट्र को करनी होगी।

"अहले दुआ तो हाथ पसारे ही रह गए,
अहले अमल ने चांद सितारों को पा लिया।"

भारत की युवा परम्परा

"युवा शक्ति", "युवा कौन" में हमने जिस युवा की कल्पना, परिभाषा, व्याख्या वर्णन किया है उसके अनुरूप युवा सनातन काल से ही अपना पराक्रम दिखाता रहा है। पराक्रम, आविष्कार, दक्षता, सिद्धि, मान्यता, प्रतिष्ठा, साधना, तप, ख्याति, रचना, सर्जन, निर्माण, दृढ़संकल्प आदि के स्तम्भ युवाओं ने प्रारंभ काल से ही स्थापित किए हैं और यह परम्परा कमोवेश आज तक कायम है। हर बार यह आंदोलन, अभियान के रूप में नहीं उभरा। सामूहिक नहीं तो व्यक्ति रूप में तो युवा ने हर समय अपने मार्ग खोजे हैं। "युवा शक्ति" और "युवा कौन" में आपने कुछ उदाहरण एवं उन गुणों की चर्चा को देखा ही है उसे यहां दोहराने की आवश्यकता नहीं है। आप संदर्भ के लिए उसे देख सकते हैं, उनका स्मरण कर सकते हैं। आपको लिखित, अलिखित, श्रुति-स्मृति के आधार पर कितने ही उदाहरण युवाओं के मिलेंगे जिनको किसी न किसी रूप में समाज ने मान्यता दी है, स्वीकारा है, अपनाया है। उन्होंने अपने क्षेत्र में कोई न कोई अमिट छाप छोड़ी है। युवा के नाम को, काम को सार्थक किया है। इसमें महिला-पुरुष दोनों का ही योगदान है। दोनों की भूमिका इसमें रही है। युवा में महिला-पुरुष दोनों ही शामिल हैं।

अकेले युवा ने भी जब कोई प्रयोग किया है तो उसका भी असर समूह, समाज राष्ट्र पर पड़ा है। उसकी व्यक्तिगत साधना, क्रांति, पराक्रम ने भी समूह व समाज को राह दिखाई है। उन्हें प्रेरणा प्रदान की है। बदलाव के रास्ते खोले हैं। लोगों में उत्साह का संचार किया है। लोगों को सोचने, समझने, जागृत होने के अवसर प्रदान किए हैं। व्यक्ति विशेष ने ही बदलाव का माहौल बनाया। उसके योगदान को हम कम करके नहीं आंक सकते हैं। युवा परम्परा और आन्दोलन का वह एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। उसे व्यवस्थित ढंग से इतिहास की तरह नहीं रखा जा सका तो क्या उसे भुला दिया जाए? कदापि नहीं। श्रुति, स्मृति, अनुभव का अपना स्थान एवं महत्त्व है। लोक परम्परा

का अपना एक अनुभव एवं ज्ञान है, उसे नकारना अपनी जड़ों को काटना होगा। जड़ से कटा पेड़ कब तक जिन्दा रहेगा? हमें अपनी जड़ों से शक्ति, ऊर्जा प्राप्त करनी चाहिए। काल, समय, वातावरण के कारण अगर जड़ में कोई खराबी या विजातीय पदार्थ इकट्ठा हो गया है तो उसे दूर करके जड़ के तत्त्व को जरूर लेना चाहिए। अपनी परम्परा का गौरव हमें प्रेरणा देगा, जीवन देगा, हममें प्राण संचारित करेगा। अपनी स्वस्थ परम्परा को मात्र इसलिए नहीं छोड़ना है कि वह पुरानी, पुरातन है। पुरातन अनुभव बेकार नहीं है। परम्परा संवर्द्धन, परम्परा से सीखना, अनुभव लेना आज के संदर्भ में उसकी प्रासंगिकता खोजना, उसके नये अर्थ को अपनाना, आज के संदर्भ में उसकी उपयोगिता की तलाश करना बहुत जरूरी है। परम्परा की श्रृंखला मानव को गहराई, व्यापकता से जोड़ती है। उसके सोच के दायरे को बढ़ाती है। उसे अकेलेपन से बचाती है। निराशा और थकान के समय उसे पुनर्जीवित करती है, ऊर्जा प्रदान करती है, युवा में प्राण फूंकती है।

हम भारतीय युवा बहुत भाग्यशाली हैं जिन्हें परम्परा से ही इतना विशाल, व्यापक एवं गहरा क्षेत्र मिला है। लगभग प्रत्येक क्षेत्र में भारतीय युवाओं ने अपनी परम्परा बनाई है। अपने दम से एक अमिट छाप छोड़ी है। जो हमारा मागदर्शन करने को तैयार है। जो हमें प्रेरणा एवं हममें प्राण भरने को तैयार है। गौरवशाली परम्परा हमें विरासत, उत्तराधिकार में प्राप्त हुई है फिर भी अगर हम इसका उपयोग न करें तो गलती किसकी है? इसके लिए दोषी कौन है? इस श्रृंखला की हमें जानकारी नहीं है तो इसमें दोष किसका है? कभी अपनी इस विरासत को जानने, समझने का अवसर हमने खोजा? हमने कभी विरासत की तलाश की? हम न जानने योग्य कितनी बातों को जानते, समझते हैं, उनके लिए समय, शक्ति का अपव्यय करते हैं? जो उपयोगी, सार्थक, आवश्यक हैं उसे जानने का हमारे पास समय नहीं है। हमें अपनी विरासत को जानना ही होगा। अगर हमें आज के युग में जिन्दा रहना है तो अपनी परम्परा, विरासत हमें ऊर्जा प्रदान कर सकती है। हमें नये-नये अनुभवों से भर सकती है। विचारों से ओत-प्रोत कर सकती है।

लगभग प्रत्येक क्षेत्र में चाहे वह आध्यात्मिक क्षेत्र हो, धार्मिक क्षेत्र हो, सामाजिक हो, आर्थिक हो, सांस्कृतिक हो, राजनैतिक हो,

शैक्षणिक हो, न्यायिक हो, औषध का क्षेत्र हो, साहित्य का क्षेत्र हो, कला-कौशल का क्षेत्र हो, व्यक्ति, परिवार, समूह, समाज, राष्ट्र, विश्व, भूगोल, विज्ञान, रसायन शास्त्र, युद्धकला, व्यापार, हस्तकला, कृषि, पशुपालन, प्रकृति, ब्रह्मांड, अंतरिक्ष, आकाश, जल, वायु, पृथ्वी, तारामंडल, आकाशगंगा, सूर्य, चन्द्रमा, मृत्यु, जीवन, जीवजगत, नदी, नाले, पहाड़, जंगल आदि बड़े से छोटे तक सबका अनुभव, ज्ञान किसी न किसी रूप में हमारी परम्पराओं में उपलब्ध है। हमारे पूर्वजों ने अपने अनुभव से हमारे लिए अनुभव छोड़ा है जिसके सहारे हम आगे बढ़ सकते हैं। जिस क्षेत्र में हम जाना चाहें उसकी नींव हमारे लिए तैयार है। हम अगर आंख खोलकर जागृत अवस्था में मेहनत करें तो हम दुनिया के लिए आज भी नई राह देने वाले हो सकते हैं। युवा जगत की इस परम्परा को हम युवा आंदोलन की श्रृंखला, निरन्तरता में देख सकते हैं, देखना चाहिए। इस प्रकार भारतीय परम्परा में युवा आंदोलन के बीज सनातन हैं। हमारी युवा परम्परा कतारबद्ध है। इसका प्रचार-प्रसार होना चाहिए। इसको पहले मान्यता दें। शून्य से अनन्त का सफर युवा पीढ़ी ने किया है। वह परम्परा हमारे साथ है।

कुछ परम्पराओं पर आज काम शुरू हुआ है। यहां वहां कुछ व्यक्ति, कुछ समूह अपनी-अपनी क्षमतानुसार इस पर कार्य कर रहे हैं, सक्रिय हैं। वे धन्यवाद के पात्र हैं। अभी बहुत क्षेत्र हैं जिनमें काम करने की गुजांइश एवं आवश्यकता है। हमें इस ओर कदम उठाने चाहिए। हमें हीन भावना से मुक्त हो, अपने गौरव, अस्तित्व को पहचानना चाहिए। हमें दो काम करने होंगे। एक तो अपनी परम्पराओं को खोजना, उन्हें उपयोगी एवं कारगर बनाना। उनके प्रति विश्वास एवं आस्था जगाना। उनके महत्त्व को समझना तथा दूसरा परम्पराओं की प्रासंगिकता देखना, आज के संदर्भ में उनकी उपयोगिता, प्रयोग, तेजी को बढ़ाना। उन परम्पराओं के आगे उनमें नये-नये निर्माण, सर्जन करना। उन्हें ज्यादा सशक्त एवं समयानुकूल, वातावरण के अनुरूप बनाना। उनकी गति, असर को और तेज बनाना। उनमें अपने नए पराक्रम जोड़ना। समस्त विश्व के सामने अपने अनुभवों, पराक्रमों का भंडार खोलना जिससे सब उससे लाभ उठा सकें। "सर्वजनहिताय, सर्वजन सुखाय", "वसुधैव कुटुम्बकम्" का भाव हमारे सामने है।

विश्व की युवा परम्परा

अपनी तरह ही विदेशों में,अन्य देशों में, पाश्चात्य देशों में भी युवा की अपनी-अपनी परम्परा रही है। उसका भान, ज्ञान भी हमें रखना चाहिए। वहां भी समय-समय पर युवाओं ने व्यक्तिगत या समूह में अपने पराक्रम दिखाए हैं। विभिन्न क्षेत्रों में उनके भी उदाहरण देखने को मिलते हैं। स्थान, समय, वातावरण, परिस्थिति, सोच आदि के कारण उनकी दिशा, परम्परा, कार्यनीति, रणनीति में विभिन्नता हो सकती है। मगर उनकी भी परम्परा (श्रृंखला) है, रही है। कहीं कम, कहीं ज्यादा। कहीं एक जैसी तो दूसरी जगह दूसरी। मौहम्मद, ईसा, प्लेटो, सुकरात, टालस्टाय, सिकन्दर, नेपोलियन, शेक्सपीयर, आइन्सटीन, गैलिलीयो आदि कितने ही युवाओं के नाम जोड़े जा सकते हैं जिन्होंने अपनी जवानी में पराक्रम कर दुःख झेले, जहर पिया मगर दुनिया को जीवन प्रदान किया। अपने जीवन की परवाह न कर उन्होंने नये रास्ते दिए, नई सोच, नई शक्ति दिखाई। ऐसे उदाहरण लगभग प्रत्येक क्षेत्र, राष्ट्र में हमें देखने को मिल जायेंगे, मिल जाते हैं। अनेक नाम आज लोगों की स्मृति में नहीं हैं। उनकी लिखित कोई यादगार नहीं बची है। वे स्मृति पटल से मिट गए हैं। लोग उन्हें बचाकर नहीं रख पाये, बचाकर रखना चाहते भी नहीं होंगे। फिर भी जितना उपलब्ध है उसके आधार पर भी एक झलक देखी जा सकती है। उसका अहसास किया जा सकता है। एक अन्दाज लगाया जा सकता है। विश्व विजेता बनने की चाह रखने वालों ने पराक्रम करने के लिए अनेक बार प्रयास किए, कुछ हद तक बढ़े भी मगर जब सही आदर्श न हो, परमार्थ का आदर्श न हो तो वह एक सीमा के बाद टूटता है, रुकता है, खंडित होता है। उसे मुंह की खानी पड़ती है। उसे लौटना पड़ता है, पश्चाताप करना होता है। सत्य की जीत होती है, असत्य की नहीं। फिर भी जो कुछ कोई करता है तो हम समझना जरूर चाहेंगे। इसी संदर्भ में अन्य देशों की परम्परा की हमने मात्र चर्चा की है।

आधुनिक युवा आन्दोलन

युवा परम्परा में हमने देखा कि सनातन रूप में युवा पराक्रम करता रहा है। युवा की श्रृंखला स्पष्ट नजर आती है। युवा का प्रत्येक समय में प्रभाव रहा है। एक समय ऐसा भी महसूस किया गया कि दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों में एक साथ युवाओं में व्यापक हलचल पैदा हुई। युवाओं का आक्रोश विभिन्न रूपों में फूटा, देखने को मिला। युवाओं के विद्रोह, विरोध का सामना किसी न किसी रूप में अनेक स्थानों पर करना पड़ा। संगठित रूप में भी युवा ने अपनी शक्ति का प्रदर्शन किया। एक आन्दोलन का रूप उभरा "युवा आन्दोलन"। इस आधुनिक युवा आन्दोलन के क्या कारण हैं? यह आन्दोलन क्यों उभरा है? किन परिस्थितियों में यह आन्दोलन सामने आया? इसको किस संदर्भ में देखा गया? यह अनेक स्थानों पर एक साथ कैसे फैला? समय, काल, स्थान, स्थिति के कारण यह बढ़ा है या कोई योजनाबद्ध ढंग से आन्दोलन खड़ा किया गया था? क्या विभिन्न स्थानों के युवाओं का आपसी समन्वय, संवाद या तालमेल था? क्या उनकी सबकी सामूहिक शक्ति एक साथ लगी हुई थी? आदि अनेक सवालों का जवाब आप इतिहास से पा सकते हैं। विश्लेषण करते समय आपको देश, काल, परिस्थिति पर विचार करना होगा। युवा की अपनी मानसिकता, उस पर पड़ते दबाव आदि के बारे में भी इनको जानना, समझना होगा। उस समय के दुनिया के विकासक्रम को देखना होगा। उसका युवा पर क्या और कैसा प्रभाव पड़ा ? बदलते परिवेश में युवा की मानसिकता किधर और कैसी विकसित हुई? युवा ने सहजता, सरलता से विद्रोह का रास्ता अपनाया मजबूरी ने उसे इस राह पर लाकर खड़ा किया।

क्रांति लाई नहीं जाती, क्रांति होती है। विभिन्न कारणों का इसमें योगदान होता है। क्रांति के प्रयास किए जाते हैं। क्रांति अपनी गति, चाल से चलती है। क्रांति के वाहक, सहयोगी, भागीदार अवश्य होते हैं। क्रांति की अपनी भूमिका होती है। क्रांति बंधी-बंधाई राह पर

नहीं आती। क्रांति एक बदलाव लाती है। क्रांति परिवर्तन की राह खोलती है। क्रांति में युवा की अहम् भूमिका होती है। युवा उसमें आगे, बढ़-चढ़कर भाग लेता है। क्रांति अनेक बातों से प्रभावित होती है। युवा और क्रांति का एक अटूट सम्बन्ध है। क्रांति तथा युवा दोनों की अपनी पहचान, इतिहास, परम्परा रही है। समस्याओं के समाधान के रूप में क्रांति को देखा जाता है। इसका प्रयोग भी समय-समय पर किया गया। सफलता-असफलता के मौके भी आए। क्रांति के बाद स्थितियां सुधर जाएंगी, समाधान मिल जाएगा, रामराज्य आ जाएगा यह कोई जरूरी नहीं है। स्थितियां सुधार की ओर भी जा सकती हैं और अधिक जटिलता की ओर भी। क्रांति होने पर समस्यायें, नई समस्यायें विकराल रूप में भी सामने आ सकती हैं। जिनके बदलाव, समाधान के लिए और अधिक प्रयास, काम की जरूरत महसूस होती है। नये आन्दोलन की जरूरत का अहसास होता है।

आन्दोलन एक उपलब्धि है। समस्याओं के समाधान के रूप में इसका प्रयोग उन्नीसवीं शताब्दी में सामने आया। सामूहिक शक्ति का प्रयोग कर, आन्दोलन कर किसी समस्या से जूझना, उसके समाधान का रास्ता खोजना। जनता में जागृति लाना। जनता को आन्दोलन में भागीदार बनाना। ये सब प्रयास हुए। आन्दोलन एक सामूहिक प्रयास है। हर आन्दोलन की अपनी एक विचार-प्रक्रिया होती है। आन्दोलन का अपना लक्ष्य रहता है। हर आन्दोलन की अपनी शक्ति होती है। इन सबके बावजूद इस पर गौर करना आवश्यक है कि आन्दोलन का रूप कैसे प्रकट हुआ ? आन्दोलन की यह शक्ति कैसे, क्यों, किस कारण से सामने आई? आन्दोलन के इस स्वरूप के इतिहास को जानने के लिए हमें उस समय की स्थिति का विश्लेषण करना होगा। युवापीढ़ी के सामने जो कुण्ठा, संत्रास, अनस्तित्व, वर्जना आदि के सवाल खड़े हुए वे क्यों और कहां से आए? किसने, किन परिस्थितियों ने युवापीढ़ी को आन्दोलन की ओर पहुंचाने को विवश किया? युवा को घुटन, टूटन के कगार पर किसने पहुंचाया? इन सबको जानने के लिए हमें पूंजीवाद एवं औद्योगिक क्रांति को देखना, समझना होगा। पूंजीवाद एवं औद्योगिक क्रांति की आधुनिक युवा आन्दोलन में एक बड़ी भूमिका रही है। आगे हम इसे देखेंगे कि आधुनिक युवा आन्दोलन को औद्योगिक क्रांति ने कैसे राह दिखाई? औद्योगिक क्रांति के कारण आन्दोलन पैदा हुआ। आन्दोलन

की मानसिकता बनाने में औद्योगिक क्रांति ने भूमि तैयार की, अवसर दिया।

पूंजीवाद एवं औद्योगिक क्रांति ने युवापीढ़ी को कुंठित किया। औद्योगिक क्रांति मानव विकास में एक जबर्दस्त मोड़ था। इसने मानव के रिश्तों को झकझोरा। उसके सम्बन्धों, रिश्तों में व्यापक परिवर्तन ला दिया। उसकी सोच ही बदल डाली। उसके नजरिये में एक मूलभूत बदलाव ला दिया। वह चीजों को अलग दृष्टि से देखने लगा। उसके सोचने-समझने, रहने-सहने, पहनने, उठने-बैठने की दिशा ही बदल गई। उसके सामने अलग-अलग क्षेत्रों का विस्तार ला दिया गया। उसकी जीवन-पद्धति में आमूलचूल परिवर्तन आ गया। वह चीजों को नये संदर्भ में देखने लगा। जिससे उसका पूरा जीवन ही प्रभावित हो गया। संघर्ष के नये मार्ग उसके सामने आ गए। उसको नई शक्ति मिल गई। यह अलग बात है कि वह शक्ति उपयोगी कितनी थी? उसने सोच के नये दायरे खोले। युवापीढ़ी इस सबसे ज्यादा प्रभावित हुई।

औद्योगिक क्रांति ने युवापीढ़ी की चेतना पर भय और आतंक का दबाव बनाया। बौद्धिक तथा भौतिक विकास के द्वार खुले। इस विकास ने मनुष्य के सोचने की प्रक्रिया में बड़ा परिवर्तन किया। समग्र अर्थतंत्र, व्यवस्था, बाजार, साधनों में बदलाव आया। मालिक-मजदूरों के रिश्ते बदले। साधनों, संसाधनों पर अधिकार का दबाव बढ़ा। साधन पूंजी का दास बनाया गया। दिशा भ्रमित अंधकार ने युवा को सोचने को विवश किया।

औद्योगिक क्रांति ने सारे यूरोप को झकझोर डाला। स्त्री, पुरुष-युवा सभी मशीन के पुर्जे बन गए। मशीनीकरण ने प्रत्येक क्षेत्र में नये मूल्य स्थापित किए। कारख़ानों में साथ-साथ काम करने के कारण स्त्री-पुरुष (युवाओं) के आपसी सम्बन्ध बने। वे समीप आए। काम करने का स्थान घर नहीं कारखाना बना। एक साथ ज्यादा लोग काम करने लगे। साथ रहने से सम्बन्ध बढ़ा। एक-दूसरे को देखने का अवसर मिला। विज्ञान एवं तकनीक ने और नए आयाम जोड़े। हथियार, बारूद ने मान्यताओं, परम्पराओं को ध्वस्त कर दिया। नारी स्वातंत्र्य का मुद्दा उठने लगा। नारी आजादी की उड़ाने भरने लगी। मांग हुई कि उन्हें राजनैतिक अधिकार मिलें। दफ्तरों, दुकानों, कल-

कारखानों में स्त्रियां काम करने लगीं। वह बराबर की चाह रखने लगी। संस्कृति, सभ्यता, सामाजिकता में तेजी से बदलाव हुआ।

जानकारी व्यापक तौर पर बढ़ी। लोगों को नई-नई जानकारी प्राप्त हुई। नये-नये आविष्कार सामने आए। प्रचार माध्यमों का विस्तार हुआ। यातायात के साधन बने। यंत्र की जकड़ एवं पकड़ बढ़ती गई। यंत्र ने सभी क्षेत्रों पर कब्जा करना जारी रखा। बाजार का विस्तार हुआ। बाजार की तलाश जारी हुई। साधनों पर अधिकार की होड़ बढ़ी। उत्पादन बाजार प्रधान बनाया गया। उपभोग के लिए उत्पादन शुरू हुआ। उत्पादन का कारण आवश्यकता नहीं उपभोग बना। थोपे हुए विकास की प्रक्रिया प्रारंभ हुई।

केन्द्रीकरण की ओर कदम बढ़ने लगे। हर क्षेत्र में, सत्ता, सम्पत्ति का हस्तक्षेप बढ़ा। सत्ता, सम्पत्ति की दखलंदाजी बढ़ी। स्पर्द्धा का युग प्रारंभ हुआ। प्रतियोगिता में सफलता को ढूंढा जाने लगा। असमानता की खाई तेजी से बढ़ी। मानव-मानव के सम्बन्धों में अन्तर आया। बाजार एक निर्णायक शक्ति बना। स्वामित्व का सवाल गहरा हुआ। सत्ता और सम्पत्ति का केन्द्रीकरण तेजी से बढ़ा। सत्ता, सम्पत्ति के रिश्ते अच्छे बने। वे एक-दूसरे का हित साधने लगे। व्यक्ति, समाज, क्षेत्र, राष्ट्रों में असमानता बढ़ी। ऊर्जा के नये स्रोत सामने आये। मनुष्य के हाथ में रोज नई शक्ति आने लगी। बाजार पर निहित स्वार्थों का नियंत्रण बढ़ा। निहित स्वार्थ एकजुट हुए जिससे आम आदमी, कमजोर का शोषण बढ़ा। आम आदमी की आवाज में दम नहीं रहा। वह निरीह प्राणी बनकर रह गया। व्यक्ति भी एक वस्तु जैसा बना दिया गया। गरीबी, बेरोजगारी, शोषण बढ़ा। पर्यावरण के सवाल खड़े हुए। प्रदूषण का रोग सामने आया। वायु, जल, ध्वनि वातावरण में प्रदूषण फैला। उत्पादन बढ़ने से साधनों, संसाधनों का दोहन अंधाधुंध शुरू हुआ। रासायनिक पदार्थों का प्रयोग भयंकर रूप में बढ़ा। विनाश के साधनों का विकास किया गया। अस्त्र-शस्त्रों को बढ़ाकर मारक शक्ति तेज की गई। संसार के विनाश का खतरा उत्पन्न हुआ।

नैतिक शक्ति कमजोर पड़ी। मूल्यों का महत्त्व घटा। नैतिक अंकुश शिथिल पड़ने लगे। सुविधाएं बढ़ीं। मूल्यों परम्पराओं पर लगातार चोट पड़ी। मूल्यहीनता बढ़ी। सफलता के नये पैमाने सामने आए। सफलता, सुख की परिभाषा बदल गई। परिवारों के सम्बन्ध

तेजी से बदले, टूटे। समाज के रहन-सहन में भारी बदलाव आया। कारखानों के आसपास बस्तियां बसने लगीं। महानगरों की श्रृंखला बढ़ने लगी। पीढ़ियों में टकराव बढ़ने लगा। गरीब ज्यादा गरीब और अमीर ज्यादा अमीर बनने लगा।

इसके साथ ही 1939 में जर्मन साम्राज्यवाद ने पौलैंड पर हमला करके दूसरा विश्वयुद्ध प्रारंभ कर दिया। हिटलर क्रुप्प फूलिक, किरडोर्फ, हूजेनबेग, टायस्सेन जैसे बड़े-बड़े औद्योगिक मालिकों से आर्थिक,, राजनैतिक, नैतिक समर्थन प्राप्त कर अंधराष्ट्रवाद का शब्दाडम्बर सारे जर्मन में फैलाने में सफल हो गया। उसकी बेलगाम, बदले से भरी हुई, प्रतिशोधवादी नीतियों ने जनमानस को बुरी तरह से उद्वेलित कर दिया। "महान जर्मन" को 1945 में बिना शर्त आत्मसमर्पण करना पड़ा। दुनिया ने युद्ध की विभीषिका को देखा। हथियारों के अंधे प्रयोग, मानवता की हत्या को बड़े पैमाने पर देखा। अणुबम ने हिरोशिमा, नागासाकी पर जो तबाही मचाई उसे दुनिया ने अपनी आंखों से देखा जिसका प्रभाव आज भी जीवन पर स्पष्ट दिखता है। युद्धों की विभीषिका ने नई पीढ़ी को सोचने के लिए मजबूर किया।

औद्योगिक क्रांति ने परिवार के आश्रय को तोड़ा। युवा भी आर्थिक स्वावलम्बी बना। उसने स्वतंत्र निर्णय की प्रक्रिया अपनाई। पीढ़ियों में टकराव बढ़ा। पुरानी पीढ़ी पुराने विचारों के प्रभाव में नई पीढ़ी को स्वतंत्र चिन्तन से रोकने लगी। नये विचार से पुरानी पीढ़ी घबराने लगी। सुविधाओं के चलन और बढ़न से युवा उधर झुका। सुविधाएं मानव की नियति बन बैठी। युवा अशांत, क्षुब्ध और आक्रोश में भरने लगे। युवा एक शक्ति है। उसमें छात्रवर्ग एक शक्ति पुंज है। छात्रों का समूह शक्ति के रूप में उभरने लगा। छात्रों को अपना भविष्य अन्धकारमय नजर आने लगा। उसके सामने सवाल खड़े होने लगे। छात्रों में "स्व" के प्रति चेतना का विकास हुआ। अन्याय के प्रति आक्रोश, गुस्सा प्रकट करने लगे। मानव मूल्यों में अचानक गिरावट ने छात्रों को हिलाया। यूरोप की पीढ़ी ने मुक्त यौनाचार को स्वतंत्रता का पर्याय मानना शुरू किया। सभी ने अपनी मनमर्जी की परिभाषाएं बना लीं। स्वतंत्रता की परिभाषा भी उन्होंने अपने लिए अपने अनुसार बना ली। बिना विवाह के युवतियां माँ बनने लगीं। कुछ देशों में अश्लीलता आम हो गई। 'अश्लीलता मेले' लगाए जाने

लगे। लोग खुले तौर पर 'सेक्स' की ओर बढ़े।

आर्थिक दृष्टि से सशक्त होने पर सुविधाओं को सहज पाकर कुछ करने को है नहीं इसलिए अलग-अलग रास्ते अपनाने लगे। हिंसा की ओर झुकाव बढ़ने लगा। नशा आदत बनने लगा। नशे का प्रभाव तेजी से बढ़ा। भोगवाद की ओर बढ़े ही नहीं बल्कि भोगवाद के शिखर पर पहुंचने की होड़ लगी। अपनी मर्जी का न होने पर युवा अपनी भड़ास अलग-अलग ढंग से निकालने लगे। अपने आक्रोश, गुस्से को प्रकट करने के लिए विभिन्न रास्ते अपनाने लगे। विभिन्न माध्यमों से उन्होंने अपना विरोध प्रकट करना शुरू किया। युवा उत्तेजित होने लगा। दुनिया के विभिन्न विश्वविद्यालयों में हलचल मचने लगी। तोड़-फोड़, मारपीट, आगजनी, हिंसा की घटनाएं घटने लगीं। 1968 में फ्रांस सरकार ने डेनियल कोहन बेदी का आवास पत्र छीना तब पेरिस के छात्रों ने आन्दोलन किया और नारा लगाया "हम सब जर्मन यहूदी हैं" फ्रांस की छात्र क्रांति के नाम पर यह आन्दोलन जाना जाता है। फ्रांस के पेरिस नगर में यह छात्र असंतोष प्रारंभ हुआ, पूरे देश में फैल गया। पुलिस और छात्रों में हिंसक वारदातें हुईं। हिंसक संघर्ष हुए। अनेक विश्वविद्यालयों में छात्रों ने कब्जा कर लिया। हड़तालों का सिलसिला जारी हुआ। जिसने यातायात, उद्योग, जनोपयोगी सेवाओं के साथ-साथ अन्य क्षेत्रों को भी प्रभावित किया। शिक्षा जगत् तो इससे पूरा प्रभावित था। फ्रांस की अर्थव्यवस्था जाम हो गई, ठप्प पड़ गई। फ्रांस अकेला पड़ने लगा। पूरा देश आन्दोलन की चपेट में आ गया।

1969 में उत्तेजित छात्रों ने टोकियो विश्वविद्यालय को आग लगा दी थी। स्वीडन के छात्रों ने कपड़े फाड़कर पहनने शुरू किए। कुछ छात्र व युवा गन्दे और नंगे रहने में ही अपनी भड़ास निकालने लगे। इंग्लैंड, अमेरिका एवं अन्य देशों के विश्वविद्यालयों में भी फ्रांस की तर्ज पर आन्दोलन उभरने लगे। छात्र विद्रोह दुनिया के कोने-कोने में नजर आने लगा। विद्रोह कहीं युद्ध के विरुद्ध प्रेम गीत गाकर, कहीं लम्बे बालों में, कहीं केशों (बालों) के नये-नये रूप में, कहीं विलक्षण वस्त्र पहनकर, कहीं नशे में, कहीं स्वच्छन्द भोग-संभोग के रूप में प्रकट हुआ। इन विद्रोही छात्रों, युवाओं को अलग-अलग नाम से पुकारा गया। इंग्लैंड के बागी युवा अपने को टोडी बॉयज, मॉडस या रॉक्स बताते। नीदरलैंड के नोझम कहे जाते। जर्मन में हावस्टार्क,

इटली में ह्विटलोनी, अमेरिका में विटनिक्स और हिप्पीज, हॉलैंड में प्रोवो कहलाए। विभिन्न सम्बोधनों में टोडी, विटेलोनी, हावस्टार्क, गुण्डा, याकुसन, स्टिल्यागि, अण्डरम्पटर, प्रोवोस, वीटनिक, हिप्पी, दादा आदि कहे जाते।

इसी काल में भारत के विभिन्न विश्वविद्यालयों में भी मार-पीट, तोड़-फोड़, हड़ताल, हिंसा की घटनायें खूब हुईं। युवाओं का गुस्सा किसी न किसी रूप में सामने आया। दिल्ली विश्वविद्यालय में एक वर्ष में सैकड़ों बसों को तोड़ा-फोड़ा गया और आग लगा दी। कभी, कहीं भी छात्र और पुलिस आमने-सामने हो जाते थे। छात्र भी मौके की तलाश में रहते थे। छोटी-छोटी बातों पर हंगामा खड़ा किया जाता था। मात्र बस की टिकट नहीं ली इसी पर मार-पीट, तोड़-फोड़ शुरू। उस समय छात्रों में आक्रोश फैला था।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि यूरोप का छात्र आन्दोलन एक स्थिति की देन है। इस स्थिति को पैदा करने में दोनों महायुद्ध, सत्ता का अंधदर्शन जिम्मेवार है। सत्तादर्शन ने युवा को दिग्भ्रमित किया। भोगवादी सुविधाओं ने उसे अलग मोड़ पर खड़ा कर दिया है। जिस ओर वह जाता है उसे अंधकार नजर आता है। वह विध्वंस, अराजकतावादी कार्य करने के लिए अपने को विवश पाता है। उसके सामने करने को कुछ नहीं है सिवाय आवारा और निरुद्देश्य जीवन जीने के। छात्र आन्दोलन, वर्तमान व्यवस्था तथा रूढ़मूल्यों के प्रति बगावत है। युवा का जागरूक मन भ्रष्टाचार, अन्याय, अत्याचार, गद्दी का संघर्ष, अयोग्यों का सम्मान, भाई-भतीजावाद को स्वीकार नहीं कर पाता। वह अभिमन्यु की तरह शोषकों, अत्याचारियों के चक्रव्यूह में अकेला फंसा हुआ है। उसे कोई अवलम्बन नहीं मिला तो टूटे हुए पहिये के सहारे ही जीवन अस्तित्व के लिए संघर्ष करता है। उसे इस शोषण चक्र से निकलना संभव नहीं लगता। ऐसी स्थिति में वह दिशाहीन ज्वालामुखी उठाए आन्दोलनोन्मुख हो उठता है। वह आन्दोलन करता है। आन्दोलन विरोध के प्रतीक हैं, विद्रोह के प्रतीक हैं।

आधुनिक युवा आन्दोलन भारतीय संदर्भ

हर विद्रोह के पीछे दर्शन होता है, कारण होते हैं। विद्रोह थोपा नहीं जा सकता है। वह अन्दर के असंतोष का कारण होता है। सत्ता, व्यवस्था उसे नकारती है और वह भड़क जाता है। युवा सम्मान का सवाल हठधर्मिता में बदल जाता है। वह विवश होकर हठधर्मी बन जाता है। हठधर्मिता उपेक्षा पैदा करती है, अलगाव बढ़ाती है और युवा गलत रास्ते अपनाने को मजबूर होता जाता है। छात्र-युवा शुरू से बदनाम है। झूठे, सच्चे आरोप उस पर लगे हैं। विभिन्न राजनैतिक दलों ने भी छात्रों, शिक्षण संस्थाओं को प्रयोगशाला समझ रखा है। अपने स्वार्थ के लिए उसका खुला, छुपा प्रयोग करते हैं। मनचाहा प्रयोग करते हैं। युवा इसके विरुद्ध आक्रोश लाते हैं तो उन्हें प्रतिक्रियावादी, नक्सली, गुण्डा, बददिमाग की उपाधि मिलती है।

युवा वर्ग में एक उन्माद है जो उन्हें जोखिम और खतरों से खेलने के लिए उत्प्रेरित करता है। उसकी मानसिक अशांति, झुंझलाहट, भड़ास इस सीमा तक बढ़ चुकी है कि उसे लड़े बगैर चैन नहीं मिलता। युवा को वर्तमान से असंतोष एवं खीझ है। भविष्य के प्रति आशंका है, मानसिक कुण्ठा और अनास्था है। उनके सामने एक ओर पश्चिम की व्यापार संस्कृति, उपभोग संस्कृति और सभ्यता है। उसे वह दूर और नजदीक से देख रहा है। भोगवाद का नशा उसे भी लुभा रहा है। भोगलिप्सा की सुखवादी मान्यताओं के प्रति उसकी दृष्टि है। भारतीय युवा आज भी अभिभावक पर आश्रित है। आर्थिक रूप से परतंत्र है। दूसरे पर आधारित है। परिवार से दबा है, चाहे परिवार अब टूटने लगे हैं, फिर भी परिवार की पकड़ अभी भारतीय युवा में है। यहां जीने का आज भी दूसरा अर्थ है। जीवन पद्धति में आज भी उम्मीदें छिपी हैं। यहां आज भी त्याग, बलिदान, साधना, भक्तिवाद के प्रति लगाव है। पुराना गौरव, इतिहास, परम्परा हमारे पास है। अभी भी विवाह संस्था को मान्यता है। विवाह, परिवार का अस्तित्व सुरक्षित है। परिवार बचे हुए हैं। आपसी सम्बन्ध रिश्ते पूरी तरह

समाप्त नहीं हुए हैं। मन में इनकी गहराइयां उतरी हुई हैं जो हमें बचा रही हैं।

राष्ट्रीय आन्दोलनों में युवा की भूमिका, भागीदारी युवा के अलग चित्र को प्रस्तुत करती है। युवाओं ने आजादी के लिए कुर्बानी दी। संघर्ष, हिंसा, अहिंसा, असहयोग से ब्रितानिया सरकार को क्षति पहुंचाने की सफल कोशिश की। आजादी के आन्दोलन में युवा की प्रारंभ से भागीदारी बनी रही। उसने आजादी के संघर्ष से अपना सम्बन्ध बनाए रखा। आजादी के संघर्ष में युवाओं का योगदान लगातार रहा। युवाओं ने बढ़-चढ़कर उत्साह के साथ आजादी के युद्ध में अपनी सक्रियता बनाए रखी। अपने को आन्दोलन का हिस्सा बनाकर रखा। आन्दोलन में अपनी उपस्थिति बनाए रखी। महात्मा गांधी के आह्वान एवं संकेत पर हजारों छात्रों ने कॉलेज एवं स्कूल की शिक्षा को तिलांजलि दे, आजादी के दीवाने बन आन्दोलन में कूद पड़े, रचनात्मक कार्यक्रमों में रुचि लेने लगे। गांव-गांव, शहर-शहर में युवा ने आजादी के स्वर गुंजाए। आन्दोलनों में युवाओं की संख्या ज्यादा रही। आजादी के लिए हर प्रकार के कष्ट झेलने की तैयारी युवा पीढ़ी ने की। युवाओं ने हंसते-हंसते फांसी के फंदे को चूमा। जेल के सींखचे उनका मनोबल नहीं तोड़ पाये। पुलिस की मार, उत्पीड़न, आतंक भी युवा के उत्साह को नहीं रोक पाया। उसने अपने को दांव पर लगाए रखा। अपने जीवन का प्रयोजन देखा और आजादी के कार्य में अपने को झोंक दिया। जब जीवन का प्रयोजन नहीं होता तो जीवन बोझ बन जाता है। जीवन नीरस, बेकार, घुटन भरा, उबाऊ बन जाता है। एक रोग बन जाता है।

आजादी के आन्दोलन में भाग लेने वाले युवाओं का जीवन तपकर तैयार हुआ। उनकी साधना, त्याग का प्रभाव उनके जीवन में स्पष्ट देखने को मिला। उनके जीवन मूल्य, निष्ठा, कर्मशीलता, सक्रियता, विचार, जीवन शैली सबमें एक छाप नजर आई। उन्हें देखकर अन्य लोगों को उत्साह जगा तथा प्रेरणा प्राप्त हुई। वे प्रेरक शक्ति के रूप में उभरे। उनके विचारों, आचरणों में स्पष्टता एवं व्यापकता बनी। जीवन के सत्य को उन्होंने समझा और उसमें रुचि ली। गांधीजी के नेतृत्व ने राष्ट्रीय आन्दोलन को एक दिशा दी। देशभर में माहौल, वातावरण, फ़िजा बनाई। अहिंसा, असहयोग, सत्याग्रह की

क्रांतिकारी सोच लोगों के समक्ष रखी। सत्याग्रह का औजार लोगों के मन एवं हाथ तक पहुंचाया। अहिंसा के पराक्रम का विश्वास जन-जन में फैलाया। युवाओं को प्रेरणा दी। आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया। आजादी की लड़ाई को मैदान में लाए। हर नागरिक को आजादी का योद्धा बनने का अवसर दिया। उसमें साहस, निर्भयता पैदा की जिससे वह अंग्रेज के सामने साहस एवं बहादुरी से खड़े हो सके। अपने खोये आत्मसम्मान को जगाया। स्वाभिमान के प्रति जागरूकता पैदा की।

महिलाओं का भी योगदान आजादी की लड़ाई में कम नहीं है। वे भी जेल गईं। सत्याग्रह, धरने, हड़तालों में भाग लिया। जुलूसों में भाग लिया। शराब आदि नशे के खिलाफ जेहाद छेड़ा। महिलाओं ने भी कंधे से कंधा मिलाकर लड़ाई लड़ी। प्रत्येक फ्रंट, मैदान पर उन्होंने अपना सहयोग, सहकार प्रदान किया। पूरी हिम्मत एवं शक्ति से वे भी साथ-साथ लड़ीं। हर तरह के कष्टों को उन्होंने भी हंसते-हंसते झेला। मध्य-युग का समय छोड़ दें तो महिलाओं के पराक्रम की भी सनातन परम्परा हमारे यहां रही है। हर क्षेत्र में उनकी भूमिका एवं योगदान रहा है। भूमिगत आन्दोलन में भी महिलाओं की अहम् भूमिका रही। युवा आन्दोलन का महिलाएं सक्रिय भाग रहीं।

आजादी के आन्दोलन के बाद छात्र आन्दोलन बढ़ने के अनेक कारण रहे। निम्न कारणों ने छात्र आन्दोलन को हवा दी—दिनोंदिन राजनैतिक दलों की बढ़ती स्वार्थपरता, भाई भतीजावाद, भ्रष्टाचार, बैक डोर एन्ट्री, बेरोजगारी, बेकारी, शोषण, उपाधियों का अवमूल्यन, पुरानी पद्धति पर चला आ रहा पाठ्यक्रम, मैकाले शिक्षा पद्धति, अफसरशाही, लालफीताशाही, बढ़ती महंगाई, नैतिक पतन, मूल्यों में गिरावट, भविष्य के प्रति निराशा, कॉलेजों में स्थान की कमी, शिक्षा संस्थाओं का माहौल, अध्यापक-छात्र सम्बन्ध, उद्देश्यहीन जीवन, राजनैतिक दलों की चालें, बांटो और राज्य करो की नीति, नेताओं का दोहरा, दोगला जीवन, विचार-आचरण का भेद, मुक्त रहो, मस्त जियो और मौज करो की नीति, नशे की लत, फैशन की दौड़ आदि ने छात्र व युवा आन्दोलन को बढ़ने का मौका दिया।

एक ओर छात्र आन्दोलन की मानसिकता को असामाजिक तत्त्वों ने कुण्ठित एवं ग्रस्त किया। अस्थिरता, मौकापरस्ती, नपुंसकता,

दलीय, जातीय, संकीर्ण क्षेत्रीयता, अस्मिता बोध, पहचान की लड़ाई, संसाधनों के सवाल ने भी छात्र युवा आन्दोलन पर दबाव बनाए रखा। दुनिया के विभिन्न देशों में जब छात्र-युवाओं में हलचल थी तब हमारे यहां भी खलबली मची। अनेक मुद्दों पर आन्दोलन, तोड़-फोड़ होती रही। धीरे-धीरे युवा आन्दोलन ने हिंसक रूप भी लिया। हिंसा के प्रति अनेक समूहों का विश्वास भी जगा। आजादी के बाद भी युवा आन्दोलन कहीं न कहीं किसी न किसी रूप में सक्रिय रहा। दलों ने भी अपने युवा समूह के रूप में कार्य किया। कांग्रेस, कम्युनिस्ट, समाजवादी, दक्षिणपंथी, सर्वोदयी आन्दोलन के साथ भी युवाओं का जोड़ रहा। अनेक युवा इनके साथ जुड़े रहे। नक्सली आन्दोलन का भी क्षेत्र विशेष में प्रभाव पड़ा। आज भी यह समूह सक्रिय है। अनेक छोटे-छोटे समूह, व्यक्तिगत तौर पर अनेक युवा आज भी सक्रिय हैं, मैदान में काम में लगे हैं। कुछ नया गढ़ने की तैयारी में लगे हैं।

इस तरह निरन्तरता में कार्य जारी है। मगर कभी आन्दोलन ने उभार भी देखे हैं। मुद्दों को लेकर आन्दोलन तेज हुए हैं। इसमें गुजरात के नवजागरण, बिहार के सम्पूर्ण क्रांति, असम, पंजाब, झारखंड, जम्मू-कश्मीर तथा उत्तर पूर्व के साथ कुछ पुराने समय को देखें तो भाषा से सम्बन्धित आंदोलन आदि के बारे में हम विचार कर सकते हैं। विनोबा का भूदान आन्दोलन भी जानने-समझने का है। भूमि समस्या का निदान, समाधान, बंटवारा का अहम् सवाल भूदान ने उठाया। पूर्ण सफलता न मिलने पर भी भूदान की एक अहम् भूमिका रही है। उसके महत्त्व को कम करके नहीं देखा जा सकता है। उसने स्वामित्व के सवाल को हल करने का प्रयास किया। स्वामित्व के सवाल पर संवाद की प्रक्रिया शुरू की। एक मूलभूत परिवर्तन की ओर कदम बढ़ाया। मानव की अच्छाई की प्रतिष्ठा में एक कदम और जोड़ा। मानव में गुण भी हैं। वह मूलतः दयालु, मिलनसार, सहयोगी है। वह परस्पर सहयोग में विश्वास रखता है।

इस प्रकार हमारे सामने एक व्यापक परम्परा, उदाहरण, इतिहास, प्रेरणा, राह मौजूद है। इसके प्रकाश में तथा अपनी शक्ति के आधार पर हमें आगे बढ़ना है। नई राह खोजनी है। युवाओं से आज भी खूब अपेक्षाएं हैं। युवा ही सक्षम है। युवा नये निर्माण एवं एक और आजादी की राह बनायेगा। आज मिलकर हमें सिद्ध करना है **"जाग उठी तरुणाई"**।

भारत की सांस्कृतिक विरासत

"मेरा यह कहना नहीं कि हम शेष दुनिया से बचकर रहें या अपने आस-पास दीवारें खड़ी कर लें। यह तो मेरे विचार से बड़ी दूर भटक जाना है। लेकिन मैं यह जरूर कहता हूंकि पहले हम अपनी संस्कृति का सम्मान करना सीखें और उसे आत्मसात् करें। दूसरी संस्कृतियों के सम्मान की उनकी विशेषताओं को समझने और स्वीकार करने की बात उसके बाद ही आ सकती है; उसके पहले कभी नहीं। मेरी यह दृढ़ मान्यता है कि हमारी संस्कृति में जैसी मूल्यवान निधियां हैं, वैसी किसी दूसरी संस्कृति में नहीं हैं। हमने उसे पहचाना नहीं हैं, उसके अध्ययन का तिरस्कार करना, उसके गुणों की कीमत कम करना सिखाया गया है। अपने आचरण में उसका व्यवहार करना तो हमने लगभग छोड़ ही दिया है। आचार के बिना कोरा बौद्धिक मसाला भरकर सुरक्षित रखा जाता है। वह शायद देखने में अच्छा लग सकता है, किन्तु उसमें प्रेरणा देने की शक्ति नहीं होती। मेरा धर्म मुझे आदेश देता है कि मैं अपनी संस्कृति को सीखूं, ग्रहण करूं और उसके अनुसार चलूं; अन्यथा अपनी संस्कृति से विच्छिन्न होकर हम एक समाज के रूपमें मानो आत्महत्या कर लेंगे। किन्तु साथ ही वह मुझे दूसरों की संस्कृतियों का अनादर करने या उन्हें तुच्छ समझने से रोकता है।

जिस घड़ी गुलाम यह इरादा कर लेता है कि अब वह गुलाम नहीं रहेगा उसी दम उसकी बेड़ियां टूट पड़ती हैं। वह खुद अपने को आज़ाद कर लेता है और दूसरों को आज़ादी की राह दिखता है। आजादी और गुलामी मन की हालत का नाम है, इसलिए पहिले अपने मन में यह ख्याल मजबूत बनाओ, अब मैं हरगिज गुलाम न रहूंगा, मैं किसी के हुक्मों को हुक्म समझकर नहीं मानूंगा बल्कि जो भी हुक्म मेरे दिल के खिलाफ होगा, उसे मानने से मैं इन्कार करूंगा।"

—गांधीजी

मेरे स्वराज्य की व्याख्या केवल राजनीतिक स्वाधीनता तक ही सीमित नहीं है। मैं जीवन के हर क्षेत्र में, धर्मराज्य तथा सत्य और अहिंसा का साम्राज्य देखना चाहता हूं। इसी प्रकार की स्वाधीनता विशाल देश के भूखे जनसमूह की आज़ादी होगी। —गांधीजी

सच्चा स्वराज्य

"सच्चा स्वराज्य कुछ लोगों द्वारा सत्ता हासिल कर लेने से नहीं आयेगा। वह तो तभी आयेगा जब सारे लोग सत्ता के दुरूपयोग को रोक सकने की शक्ति हासिल कर लेंगे।" —गांधीजी

व्यक्ति मध्य बिन्दु

"समुद्र की लहरों की तरह जिंदगी एक के बाद एक घेरे की शक्ल में होगी और व्यक्ति उसका मध्य बिन्दु होगा। वह व्यक्ति हमेशा अपने गांव के लिए मिटने को तैयार होगा। गांव, अपने इर्द-गिर्द के गांवों के लिए मिटने के लिए तैयार होगा। इस तरह आखिर सारा समाज ऐसे लोगों का बन जायेगा जो उद्धृत बनकर किसी पर हमला नहीं करते, बल्कि हमेशा नम्र रहते हैं और अपने में समुद्र की उस शान को महसूस करते हैं जिसके वे एक अमिट अंग हैं।—गांधीजी

अकेले डटे रहे

व्यक्ति की पूजा के बजाय गुण की पूजा करनी चाहिए। व्यक्ति तो गलत साबित हो सकता है और उसका नाश तो होगा ही, गुणों का नाश नहीं होता।

हर एक बडे ध्येय के लिए जूझनेवालों की संख्या का महत्व नहीं होता। जिन गुणों से वे बने होते हैं, वे गुण ही निर्णायक होते हैं। संसार के महान से महान पुरुष हमेशा अपने ध्येय पर अकेले डटे रहे हैं।" —गांधीजी

स्वराज्य का अर्थ

"स्वराज्य एक पवित्र शब्द है, जिसका अर्थ आत्म-शासन और आत्म-संयम है।

मेरे सपनों के भारत में जाति या धर्म के भेदों का कोई स्थान नहीं हो सकता। उस पर शिक्षितों या धनवानों का एकाधिपत्य नहीं होगा। वह स्वराज्य सबके लिए सबके कल्याण के लिए होगा। सब की गिनती में किसान तो आते ही हैं, किन्तु लूले-लंगड़े, अंधे, भूख से मरने वाले, लाखों-करोड़ों मेहनत कश मजदूर भी अवश्य आते हैं।

—गांधीजी

सत्ता या हुकूमत का क्षेत्र बहुत छोटा रहता है। मगर सेवा का क्षेत्र तो बहुत बड़ा है। वह उतना ही बड़ा है जितनी बड़ी धरती है। उसमें अनगिनत कार्यकर्त्ता समा सकते हैं। —गांधीजी

मेरे साहसी युवको यह विश्वास रखो कि तुम्हीं सब कुछ हो—महान कार्य करने के लिए इस धरती पर आये हो। गीदड़-घुड़कियों से भयभीत हो जाना नहीं, चाहे वज्र भी गिरे, तो भी निडर हो खड़े हो जाना और कार्य में लग जाना।

—स्वामी विवेकानन्द

खड़े होओ, साहसी बनो, शक्तिमान बनो। सारा उत्तरदायित्व अपने कन्धों पर लो, और जान लो कि तुम्हीं अपने भाग्य के विधाता हो। तुम्हें जो कुछ बल और सहायता चाहिए सब तुम्हारे भीतर है। अतएव अपना भविष्य तुम स्वयं गढ़ो। —स्वामी विवेकानन्द

सच्चे सेवक बनो

❑ राष्ट्र को आज वीरों की जरूरत है। ❑ सच्चे वीरों के देश के लिए ❑ अपने प्राणों को हथेली पर रखकर ❑ कार्य करते रहना चाहिए। ❑ याद रक्खो। ❑ मेरे भारतवर्ष के नौजवान साहसी वीर होने चाहिए। ❑ "सच्चे सेवक बनो" ❑ यह भारत माता का आदेश है। ❑ उठो ! जागो !! ❑ सेवा-धर्म की पताका लेकर ❑ कर्त्तव्य पथ पर आगे बढ़ो। ❑ मैं तुम्हें अपनी शक्ति से ❑ चेतावनी दे रहा हूं।

—टुक्डया दास

पागल दौड़

जो लोग आप अपनी आवश्यकताएं बढ़ाते रहने की पागल दौड़ में लगे हैं, वे व्यर्थ ही यह मान रहे हैं कि ऐसा करके वे अपने सत्व में वृद्धि कर रहे हैं और अपने सच्चे ज्ञान को बढ़ा रहे हैं। उनके लिए एक ऐसा दिन अवश्य ही आएगा, जब उन्हें अपने से पूछना होगा कि "हम क्या कर बैठे ?"

एक के बाद एक संस्कृति आई और गई लेकिन अपनी प्रगति की बड़ी-बड़ी डींगों के बावजूद मुझे बार-बार यह पूछने की इच्छा होती है कि आखिर यह सब किसलिए ? —गांधीजी

इसी पुस्तक से

. . .मानवीय सत्त्व और शील के उत्कर्ष के लिए उम्र कोई कसौटी नहीं है। हमारे पूर्वजों ने साधारणतः कम उम्र में ही बड़े-बड़े काम कर दिखाये हैं। प्रत्येक क्षेत्र में युवा ने अपने कार्यों से प्रकाश स्तम्भ एवं मानक-स्तम्भ पैदा किये हैं। नये द्वार खोले हैं। नई मान्यतायें, परम्परायें स्थापित की हैं। किसी भी महान व्यक्ति के जीवन को देखें तो आमतौर पर पायेंगे कि युवापन में ही उन्होंने जीवन की ऊंचाइयों की ओर बढ़ना शुरू किया। छोटी उम्र से ही उन्होंने जीवन की नींव मजबूत करनी शुरू की। छोटी उम्र में ही अपने जीवन का ध्येय, लक्ष्य, उद्देश्य देखा और उस ओर कदम उठाकर सफलता प्राप्त की।. . . .

. . . . आज कैसी भी परिस्थिति हो मगर अब भी युवा, तरुणाई पर ही नजर जाती है वे ही आशा, विश्वास के पात्र हैं। उनमें से ही सदा की तरह चिंगारी उठेगी। युवा ही अपना दायित्व सम्भालेगा। तरूणाई ही नई राह खोजेगी, वही नई राह दिखलाएगी। कितना भी अंधकार गहरा हो रोशनी होते ही उसका अस्तित्व क्षणभर में दूर हो जाता है, चाहे वह सैंकड़ों वर्षों का अंधकार हो। आज भी युवा प्रयासरत है। अंधकार, शोषण, अन्याय, असमानता, द्वेष, अलगाव, भ्रष्टाचार, भेद, अत्याचार के विरुद्ध आज भी युवा पीढ़ी से ही आवाज उठ रही है, उठेगी।. . . .

सत्ता या हुकूमत का क्षेत्र बहुत छोटा रहता है। मगर सेवा का क्षेत्र तो बहुत बड़ा है। वह उतना ही बड़ा है जितनी बड़ी धरती है। उसमें अनगिनत कार्यकर्त्ता समा सकते हैं।

—गांधीजी

मेरे साहसी युवकों यह विश्वास रखो कि तुम्हीं सब कुछ हो—महान कार्य करने के लिए इस धरती पर आये हो। गीदड़-घुड़कियों से भयभीत हो जाना नहीं, चाहे वज्र भी गिरे, तो भी निडर हो खड़े हो जाना और कार्य में लग जाना।

—स्वामी विवेकानन्द

खड़े होओ, साहसी बनो, शक्तिमान बनो। सारा उत्तरदायित्व अपने कन्धों पर लो, और जान लो कि तुम्हीं अपने भाग्य के विधाता हो। तुम्हें जो कुछ बल और सहायता चाहिए सब तुम्हारे भीतर है। अतएव अपना भविष्य तुम स्वयं गढ़ो।

—स्वामी विवेकानन्द